maryammagazine.net

JULY 2020 - 30:00

मरयम

मोहब्बतः फ़ैमिली लाइफ़ की बुनियाद

स्ट्रेस को कैसे दूर करें?

इन्सानः सबसे अच्छा क्यों है?

इश्क़ का सफ़र

ज़रा इस पर भी ध्यान दीजिए

मुझे अब्दुल ग़फ़ूर जैसी मौत आए

11
ज़ीक़ाद

इमाम अली रज़ा[अ०] की विलादत आप सब को मुबारक हो!

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111

UNITY P.G. & LAW COLLEGE, LUCKNOW

Affiliated to University of Lucknow | Recognized Under Section 2(f) and 12 (B) of UGC Act.

ADMISSION OPEN

www.unitypgcollege.com | unitydegree@gmail.com

FOUNDER HON'BLE LATE JUSTICE MURTAZA HUSAIN
Ex- Lokayukt (U.P.)

FACILITIES

- Experienced Faculty
- Wi-fi Campus with Lush Green Cover
- Active Placement Cell
- Scholarship
- Free coaching for IAS, IPS, PCS(J), Bank PO & other Competitive Exams
- Fee Concession to meritorious students
- Moot Court, ET Room and Language Room
- Separate Hostel Facility for Boys and Girls
- Hygienic & well equipped cafeteria
- Transport facility
- Gymnasium

COURSES OFFERED

LL.B (Hons.) | LL.B (3 Years) | B.Com | M.Com
B.B.A | B.Ed. | D.El.Ed. (B.T.C) | B.A

WE ARE PROUD OF OUR STUDENTS

Tarif Mustafa Khan (U.P. PCS J) 2018

Anuj Sinha (U.P. PCS J) 2018

Kuwar Divyadarshi (U.P. PCS J) 2018

Nitinendra Singh (M.P. PCS J) 2018

Diksha Agarwal (U.P. PCS J) 2018

Shivam Singh (U.P. PCS J)

Urooj Fatima (U.P. PCS J)

Nidhi Solanki (U.P. PCS J)

Shivam Singh (Bihar & JK PCS J) 2019

Sector B, Basant Kunj, IIM By Pass Road, Lucknow-226101
Contact : 7570006104 | 7570006105 | 7570006113

RNI No: UPHIN/2012/43577 Monthly Magazine

मरयम

Vol:9 | Issue: 05 | JULY, 2020

इस महीने आप पढ़ेंगी...

मोहब्बतः फ़ैमिली लाइफ़ की बुनियाद	6
सूरए नस्र	8
स्ट्रेस को कैसे दूर करें?	10
कुछ बातें इमाम अली रज़ा[अ] की ज़िंदगी से	12
एक दुआ	14
माँ–बाप की ख़िदमत जिहाद से बढ़कर है	16
जिसकी क़ब्र तूस में बनेगी	17
इश्क़ का सफ़र	19
इमाम अली[अ] का एक ख़त	22
हज़रत नजमा ख़ातून	25
ख़ुदा की सिफ़तें	26
अच्छा इन्सानः इमाम बाक़िर[अ] की नज़र में	28
क़ुरबानी की याद में	30
इमाम मोहम्मद तक़ी[अ] की 5 नसीहतें	32
डिश	34
इन्सानः सबसे अच्छा क्यों है?	36
इस केस पर भी ज़रा ध्यान दीजिए	38
मुझे अब्दुल ग़फ़ूर जैसी मौत आए	40

Chief Editor
S. Mohd. Hasan Naqvi

Editorial Board
Nazar Abbas Rizvi
Mohd. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi
Imtiyaz Abbas Rizwan

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Mohammad Aqeel Zaidi

Distribution Manager
Baqir Hasan Zaidi

Contributors
Sajjad Haider Safavi
M. Husain Zaidi

Graphic Designer
Siraj Abidi
98390 99435
73096 30683
imagine graphix

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नही है। 'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले संपादक से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कॉन्टेन्ट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कार्रवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद हम किसी भी तरह की पूछताछ और कार्रवाई पर जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक 'मरयम' के लिये आने वाले कॉन्टेंट्स में ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi
printed at Swastika Prinwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and
published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003

MARYAM A/C: 55930 10102 41444 **Union Bank of India**
Tahseenganj Branch (Unity Branch) Lucknow **IFSC: UBIN0555932**

सब्क्रिप्शन के लिए चेक/ड्राफ़्ट पर सिर्फ़ **MARYAM** लिखिए।
चेक, ड्राफ़्ट और मनी आर्डर इस पते पर भेजिए:
Mohd. Hasan Naqvi, 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 99566 20017, email: maryammonthly@gmail.com

Head Office: Imambada Ghufranmab, Chowk Mandi, Lucknow
Registered Office: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

इमाम अली रज़ा अ0

अगर कोई किसी मोमिन का कोई दुख-दर्द दूर करता है
तो अल्लाह क़यामत में उसके दिल में पाए जाने वाले ग़मों की गिरह खोल देगा।

(मीज़ानुल हिकमत, 5/280)

फ़ैमिली लाइफ़ की बुनियाद

मोहब्बत

■ सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई

घर और घराना

ख़ुदा की नज़र में घर को बसाने का मतलब ''मवद्दत'' के झरने के किनारे प्यार, मोहब्बत और ख़ुदा की इताअत की बुनियादों पर घर बनाना है। मवद्दत यानी मज़बूत और गहरा इश्क़ व मोहब्बत, ख़ुशी, ज़िन्दगी के ख़ूबसूरत और न भुलाए जाने वाले पल।

''उसने तुम में मवद्दत और रहमत को रख दिया है।''

यह 'मवद्दत' असल में ख़ुदा की मोहब्बत का एक गहरा समन्दर है।

हमारे रहमान, रहीम और मेहरबान ख़ुदा ने अपने इरादे से ''आसमानी मोहब्बत'' की इस आग की ''चिंगारी'' शादी करने वाले हर नये नौजवान जोड़े में डाल दी है ताकि दोनों एक-दूसरे को ''दिल के आईने'' में ख़ुदा की ''ख़ूबसूरत निशानियों'' में से एक निशानी के तौर पर देख सकें और अपने एक-दूसरे के ''राज़ों के जानने वाले'' के हाथों ख़ुदाई मोहब्बत का मीठा जाम पियें और कामयाब हो जाएं।

''बेशक! इसमें सोचने-समझने वालों के लिए निशानी है।''

यह मोहब्बत असल में वह धागा है जिसे ख़ुदा अपने मेहरबान हाथों से आपस में शादी करने वाले दो नौजवानों के दिलों को बाँधता है। यह वह बन्धन है जो ख़ुदा के नाम और ख़ुदा के हुक्म से उन दोनों के बीच जुड़ता है। यह मोहब्बत वह अनमोल ख़ज़ाना है कि अगर इसे संभाल कर रखा जाए तो यह हमारी ज़िन्दगियों को रंग-बिरंगा बना देता है, हमारी ज़िन्दगी में चार-चाँद लगा देता है, ज़िन्दगी की कड़वाहटों को मिठास और सख़्तियों को आसानियों में बदल देता है।

अगर ख़ुदा की दी हुई इस नेमत का ठीक से ध्यान रखा जाए और उसका शुक्र किया जाए तो फिर ख़ुदा की मोहब्बत को पाना भी आसान हो जाता है। मियाँ-बीवी इस क़ीमती ख़ज़ाने के ज़रिये अपनी सारी दिली आरज़ुओं को पूरा कर सकते हैं और ज़मीन पर ही जन्नत का मज़ा ले सकते हैं, लेकिन एक शर्त है.....!

शर्त यह कि अपने इस रिश्ते और बन्धन को सजोए रखिए और अपनी-अपनी समझ व अक़्ल का इस्तेमाल करते हुए इसे हर तरह के ख़तरे से बचाकर रखिये।

लेकिन कैसे ?

ज़िन्दगी का असली रूप

ज़िन्दगी के बाहरी रूप से बढ़ कर इन्सान की उम्मीदें, ख़्वाहिशें, मोहब्बत और इमोशंस इन्सान की ज़िन्दगी में बड़ा रोल निभाते हैं और साथ ही ज़िन्दगी की मज़बूत और ऊँची इमारत की पक्की बुनियाद भी बनाते हैं।

अब सवाल यह है कि इन सब को कैसे कन्ट्रोल किया जा सकता है ?

यही वह जगह है जहाँ मियाँ-बीवी को फ़ैमिली लाइफ़ में अपना-अपना रोल पहचानना है। यही वह जगह है जहाँ मर्द अपनी बीवी को और बीवी अपने शौहर को मोहब्बत भरी नज़रों से देखती है। दोनों के दिलों में एक-दूसरे के लिए पाक मोहब्बत होती है। अपनी इस मोहब्बत को संभाल कर रखना भी बहुत ज़रूरी होती है। यह मोहब्बत दूसरी सारी चीज़ों की तरह ख़त्म भी हो सकती है इसलिए इस मोहब्बत को बचाकर और संभालकर रखना दोनों की ड्युटी है।

मोहब्बत ही तो सब कुछ है

अगर मियाँ-बीवी की फ़ैमिली लाइफ़ में मोहब्बत का रंग भरा हो तो घर से बाहर या घर के अन्दर की सारी सख़्तियाँ और मुश्किलें दोनों के लिए आसान हो जाती हैं।

शादी शुदा ज़िन्दगी में असली चीज़ मोहब्बत ही तो है। शादी करने वाले लड़के-लड़कियों को यह बात अच्छी तरह से जान

लेना चाहिए। यह मोहब्बत जो ख़ुदा ने एक- दूसरे के लिए आप दोनों के दिलों में रखी है इसको बहुत अच्छी तरह से संभाल कर रखिए।

हमारे आपसी रिश्ते-नाते असल में हमारी आपसी मोहब्बत और हमदर्दी पर डिपेंड करते हैं। इसका मतलब यह है कि मियाँ-बीवी को चाहिए कि वह आपस में मोहब्बत का यह रिश्ता बनाए रखें ताकि यह मोहब्बत उनकी ज़िन्दगी को आसान और मज़ेदार बना दे। लेकिन इस बात की तरफ़ भी ध्यान रहे कि मोहब्बत का माल-दौलत, लग्ज़री भरी लाइफ़ और इस तरह की दूसरी चीज़ों से कोई लेना-देना नहीं होता है।

यह मोहब्बत ही है जो आपके घर को मज़बूत बनाती है। असल में ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी का सीक्रेट मोहब्बत ही है क्योंकि कठिन से कठिन मोड़ भी मोहब्बत के ज़रिये आसानी से पार हो जाते हैं। अगर इन्सान मोहब्बत के साथ ख़ुदा के रास्ते में क़दम रखे तो ज़िन्दगी की सारी सख़्तियाँ और सारे काम आसान हो जाते हैं।

जितनी ज़्यादा हो उतना ही अच्छा है

मियाँ-बीवी आपस में जितनी मोहब्बत करें, कम है। यही वह जगह है जहाँ दो नौजवान जितनी भी मोहब्बत करें कम है। यही वह जगह है जहाँ जितनी भी ज़्यादा मोहब्बत हो इसमें कोई बुराई नहीं। यहाँ मोहब्बत जितनी ज़्यादा हो, अच्छी है क्योंकि यह मोहब्बत एक-दूसरे पर भरोसे का माहौल बनाती है। मियाँ-बीवी की मोहब्बत भी ख़ुदा से की जाने वाली मोहब्बत का ही एक हिस्सा है। यह उन ख़ूबसूरत मोहब्बतों में से एक है जो जितनी ज़्यादा हों उतना ही अच्छा है।

मोहब्बत से काँटे भी फूल बन जाते हैं

मियाँ-बीवी की आपसी मोहब्बत उनकी मेरिटल लाईफ़ को कामयाब बना देती है है। कामयाबी यही है कि मियाँ-बीवी एक-दूसरे को पसन्द करते हों और एक-दूसरे को चाहते हों।

जब ज़िन्दगी पर मोहब्बत की बारिश हो रही हो तो इस मोहब्बत के ज़रिये काँटे भी फूल बन जाते हैं। अगर मियाँ या बीवी में कोई बुरी आदत हो लेकिन दोनों के बीच मोहब्बत का रिश्ता मज़बूत हो तो वह बुरी आदत कुछ ही दिनों में सिरे से ख़त्म हो जाती है। मोहब्बत, बुरी आदत को इस तरह ख़त्म कर देती है जिस तरह उजाला अन्धेरे को ख़त्म कर देता है।

मोहब्बत किसी के कहने से नहीं होती है

मोहब्बत कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि किसी के कहने से हो जाए। मोहब्बत ख़ुद आपके हाथों में है। आप चाहें तो अपने शौहर या अपनी बीवी के दिल में अपनी मोहब्बत को परवान चढ़ा सकते हैं। लेकिन किस तरह? मोहब्बत, अच्छे अख़्लाक़, अच्छे बिहेवियर, अच्छे मॉरल्स और वफ़ादारी के ज़रिये।

अगर बीवी चाहती है कि उसका शौहर उस से मोहब्बत करे तो उसे चाहिए कि वह भी इस सफ़र में उसका साथ दे। इसी तरह अगर मर्द भी चाहता हो कि उसकी बीवी उसे पसन्द करे तो उसे भी इस काम के लिए मेहनत करना होगी क्योंकि मोहब्बत के लिए हमेशा मेनहत और कोशिश की ज़रूरत होती है।

मोहब्बत बस उसी हाल में बाक़ी रह सकती है जब मियाँ-बीवी दोनों एक-दूसरे के हक़ और अपनी-अपनी हदों का ध्यान रखें और उन हदों से आगे न बढ़ें। मियां-बीवी ज़िन्दगी में एक-दूसरे के लाइफ़ पार्टनर होते हैं और एक साथ ज़िन्दगी बिता रहे होते हैं, इसलिए दोनों को इस बात की कोशिश करना चाहिए कि दोनों एक-दूसरे के दिल और दिमाग़ में अपनी एक ख़ास जगह बनाएं और एक-दूसरे के दिल में बस जाएं। यह मियाँ-बीवी के बीच वही दिल का रिश्ता है जिसे इस्लाम ने हमें बड़ी अच्छी तरह से समझा दिया है।

अगर आप दोनों चाहते हैं कि यह मोहब्बत अमर हो जाए तो एक-दूसरे से यह उम्मीद मत रखिये कि सामने वाला आप से मोहब्बत करे बल्कि आप ही शुरूआत कर दीजिए और अपने दिल से उस पर अपनी मोहब्बत के फूल बरसा दीजिये। इसका रिज़ल्ट यह होगा कि उसे आपसे मोहब्बत हो जाएगी क्योंकि मोहब्बत है ही ऐसी चीज़ जो अपने आप सामने वाले को अपनी तरफ़ खींच लेती है।

सच्ची मोहब्बत

आज की दुनिया में मोहब्बत को एक बहुत बुरी चीज़ बना दिया गया है। आज जिस चीज़ को इश्क़ व मोहब्बत का नाम दे दिया गया है, वह सच्ची मोहब्बत और इश्क़ नहीं है। यह वह सेक्चुअल डिज़ायर्स हैं जिन्हें लोग एक ख़ास रूप में ज़ाहिर करते हैं। हो सकता है कि यह बनावटी इश्क़ और मोहब्बत, सच्चे इश्क़ और मोहब्बत जैसा ही दिखता हो लेकिन इस मोहब्बत की कोई क़ीमत नहीं है। सच्चा और क़ीमती इश्क़ और मोहब्बत वह है जो शादी करने वाले लड़के और लड़की के बीच ख़ुदा की पसन्द और पाक मोहब्बत पर परवान चढ़ता है जो उन्हें एक-दूसरे लिए ज़िम्मेदार बना देता है।

इसलिए शादी करने वाले लड़े-लड़कियों को यह बात अच्छी तरह से जान लेना चाहिए कि निकाह और शादी के बाद वह दोनों एक रूह और दो जिस्म की तरह हो जाते हैं यानी अब दोनों एक ही मंज़िल के मुसाफ़िर हैं। यही वह मोहब्बत है जिसकी बुनियाद पर एक अच्छी और इस्लामी फ़ैमिली बनाई जाती है।

वह मोहब्बत जिसे ख़ुदा ने इन्सानी दिलों में डाला है, अगर वह मोहब्बत सही इस्लामी रिश्ते यानी शादी के रूप में बाक़ी रहे और इंसान हर जगह जानवरों की तरह मुँह न मारता फिरे तो फिर यह मोहब्बत हर पल बढ़ती ही जाती है। ●

सूरए नस्र

आयतुल्लाह
नासिर मकारिम शीराज़ी

यह सूरह मदीने में नाज़िल हुआ था और इसमें तीन आयतें हैं।

इस सूरे में क्या कहा गया है ?

यह सूरह मक्के से मदीने में हिजरत के बाद नाज़िल हुआ था और इसमें पैग़म्बर[स०] को एक बड़ी कामयाबी की ख़बर दी गई थी। यह भी बताया गया था कि अब इसके बाद लोग तेज़ी से इस्लाम के झण्डे के नीचे आने लगेंगे और ख़ुदा के दीन को अपनाएंगे। इस कामयाबी के शुक्र के लिए पैग़म्बर को तस्बीह, हम्द और इस्तेग़फ़ार का हुक्म दिया गया था।

कौन सी कामयाबी की बात थी ?

इस्लाम को बहुत सी कामयाबियाँ मिली हैं लेकिन जिस कामयाबी की तरफ़ इस सूरे में इशारा किया गया है और इसके लिए जो निशानियाँ बयान की गई हैं उन्हें देख कर पता चलता है कि यहाँ ''फ़त्हे मक्का'' (मक्के की जीत) की बात की गई है। जैसा कि कुछ हदीसों में इस बात की तरफ़ इशारा भी हुआ है कि अरब वालों का मानना था कि अगर अल्लाह के रसूल[स०] मदीने से वापस मक्के की तरफ़ जाते हैं, जीतते हैं और मक्के पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं तो यह उनके सही होने का सबसे बड़ा सुबूत होगा।

कुछ लोगों का मानना है कि यह सूरह ''हुदैबिया की सुलह'' के बाद छठी हिजरी में नाज़िल हुआ था और मक्का इस सूरे के उतरने के दो साल बाद मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया था।

अल्लाह के रसूल[स०] की वफ़ात की तरफ़ इशारा

इस सूरे का एक नाम ''सूरए तौदीअ्'' भी है जिसका मतलब है ''ख़ुदा हाफ़ज़ी और अलविदाअ् कहना'' क्योंकि इस सूरे में पैग़म्बर[स०] की ख़ुदा हाफ़ज़ी यानी उनके इस दुनिया से जाने की बात कही गई है।

एक हदीस में आया है कि जब यह सूरह नाज़िल हुआ और अल्लाह के रसूल[स०] ने अपने साथियों के सामने यह सूरह पढ़ा तो सभी लोग ख़ुश हुए लेकिन रसूल[स०] के चचा अब्बास रोने लगे। पैग़म्बर[स०] ने कहा, ''चचा! आप रो क्यों रहे हैं ?''

उन्होंने जवाब दिया, ''मेरे ख़याल से इस सूरे में आपकी वफ़ात की ख़बर दी गई है।''

पैग़म्बर[स०] ने फ़रमाया, ''जी हाँ! वैसा ही है जैसा आप सोच रहे हैं।''

इस सूरे की फ़ज़ीलत

इस सूरे की फ़ज़ीलत के बारे में अल्लाह के रसूल[स०] फ़रमाते हैं, ''जो इस सूरे की तिलावत करेगा वह ऐसा ही है जैसे मक्के की कामयाबी के वक़्त वह रसूल[स०] के साथ रहा हो।''

एक दूसरी हदीस में इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की ज़बानी मिलता है, ''जो भी इस सूरे (इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह्) को वाजिब या नाफ़िला नमाज़ों में

पढ़ेगा ख़ुदा दुश्मनों पर उसे कामयाबी देगा और क़यामत में जब वह हश्र के मैदान में आएगा उसके हाथ में एक ख़त होगा जो बातें कर रहा होगा, वह ख़त ख़ुदा की तरफ़ से उसे दिया गया होगा जो उसके लिए जहन्नम से निजात का सर्टिफ़िकेट होगा।''

यहाँ यह बात बिल्कुल साफ़ है कि यह सारे फ़ायदे और फ़ज़ीलत सिर्फ़ उसी को नसीब होगी जो इस सूरे को पढ़ने के साथ-साथ अल्लाह के रसूल[ﷺ] के रास्ते पर भी चल रहा हो और उनकी सीरत पर अमल कर रहा हो।

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।

आयत नम्बर-1:

اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَ الْفَتْحُ

(इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह्)

जल्दी ही अल्लाह की मदद आएगी और कामयाबी मिलेगी।

आयत नम्बर-2

وَ رَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللهِ اَفْوَاجاً

(व-र-अइ-तन-ना-स यद्ख़ुलू-न फ़ी दीनिल-लाहि अफ़्वाजा)

और आप देखेंगे कि लोग जत्थों की शक्ल में अल्लाह के दीन में शामिल हो रहे हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि दुश्मन से लड़ने और उसे हराने के लिए ताक़त, हथियार और मज़बूत फ़ौज की ज़रूरत होती है, लेकिन ख़ुदा पर यक़ीन रखने वाला और तौहीद को मानने वाला इन्सान इन सब चीज़ों के होते हुए भी इस बात पर यक़ीन रखता है कि कामयाबी ख़ुदा की तरफ़ से ही मिलना है। इसी लिए वह कामयाबी मिलने पर किसी बड़ाई और घमण्ड का शिकार नहीं होता बल्कि ख़ुदा का शुक्र अदा करता है।

आयत नम्बर-3

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ اِنَّهُ كَانَ تَوَّاباً

(फ़-सब-बिह बि-हम-दि रब्बि-क वस-तग़्-फ़िर-हू इन्नहू का-न तव्वाबा)

इसी लिए इस कामयाबी और इस बड़ी नेमत के मिल जाने पर ख़ुदा का हुक्म है कि अपने रब की हम्द (तारीफ़) करो, उसकी तस्बीह करो और उसके सामने इस्तेग़फ़ार करो।

इस बात को जानते और मानते हुए कि अल्लाह इन्सानों की तौबा को क़ुबूल करने वाला है, इस सूरे में आपने समझ लिया होगा कि पहले ख़ुदा की तरफ़ से मदद और उसके बाद कामयाबी की बात कही गई है और फिर यह बताया गया है कि लोग किस तरह जत्थों के रूप में ख़ुदा के दीन में आएंगे।

यह तीनों चीज़ें एक-दूसरे के बाद हैं और एक-दूसरे की वजह से हैं यानी जब तक ख़ुदा की तरफ़ से मदद नहीं आएगी तब तक कामयाबी नहीं मिलेगी और जब तक कामयाबी नहीं मिलेगी और रास्ते की रुकावटों को हटा नहीं दिया जाएगा तब ता लोग तेज़ी से इस्लाम की तरफ़ नहीं बढ़ेंगे। यह तीन बातें समझाने के बाद इन्सान पर एक ज़िम्मेदारी डाली गई है और वह है हम्द, तस्बीह और इस्तेग़फ़ार।

''तस्बीह'' का मतलब यह है कि हम ख़ुदा को हर ऐब और कमी से पाक समझें।

''हम्द'' का मतलब यह है कि जो भी अच्छाई और कमाल हम सोच सकते हैं या नहीं सोच सकते वह सब कुछ ख़ुदा में है बल्कि कोई भी अच्छाई ख़ुदा से अलग नहीं है।

''इस्तेग़फ़ार'' का मतलब यह है कि जो भी कमियाँ और बुराईयाँ हैं वह इन्सानों के अन्दर पाई जाती हैं इसलिए इन्सान ख़ुदा से चाहता है कि वह उसकी कमियों को दूर करने में उसकी मदद करे और अच्छाईयों से अपने आप को सजाने की तौफ़ीक़ दे।

मक्के की कामयाबी का नतीजा

मक्के की जीत के बाद मिलने वाली कामयाबी से मुसलमानों और उनके दुश्मनों को इस बात का यक़ीन हो गया था कि इस्लाम को मानने वाले अकेले नहीं हैं बल्कि ख़ुद ख़ुदा उनके साथ है।

इस कामाबी से इस्लाम को बहुत फ़ायदा पहुँचा था और दुश्मन ने 22 साल के बाद अपनी हार मान ली थी। इस कामयाबी के बाद पूरे अरब से शिर्क और बुतों की पूजा का सिस्टम मिट गया था और इस्लाम दूसरे मुल्कों की तरफ़ बढ़ने के लिए तैयार हो गया था।

STRESS को कैसे दूर करें ?

■ लियाक़त अली जतोई

इस बात में कोई शक नहीं है कि स्ट्रेस हमारी ज़िन्दगियों पर बहुत बुरा असर डाल रहा है लेकिन अकसर लोग इसे टम्प्रेरी साइकॉलोजिकल प्रॉब्लम समझते हुए नज़र अन्दाज़ कर देते हैं।

स्ट्रेस हमारी कोई भी काम करने की सलाहियत पर निगेटिव असर डालने के अलावा हमारी हंसती-खेलती और सेहत मन्द ज़िन्दगी बिताने की सलाहियत को भी कम करने की वजह बनता है।

जब आप स्ट्रेस का शिकार होती हैं तो आप हर क़दम पर ख़ुद को न सिर्फ़ बीमार और उखड़े मिज़ाज वाली महसूस करती हैं बल्कि आपको ग़ुस्सा भी ज़्यादा आता है। थका देने वाले रोज़ाना के काम और हद से ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ इस सिचुवेशन को और भी गम्भीर बना देती हैं।

ऐसे में यह बहुत ज़रूरी हो जाता है कि आप ज़िन्दगी बिताने के लिए ऐसा रास्ता अपनाईये जिस पर चलते हुए आप अपने स्ट्रेस में कमी ला सकें। आज हम आपके साथ कुछ काम के एडवाइसेस शेयर कर रहे हैं, जिन पर अमल करने से आप अपनी बिज़ी-लाइफ़ में ख़ुद को स्ट्रेस से दूर रख सकती हैं।

अपनी रूटीन में डिसिप्लिन लाईये

बड़े कहते हैं कि इन्सान को ज़िन्दगी अपनी ख़्वाहिशों या डिज़ायर्स के बजाए अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ बिताना चाहिए। अपने रोज़ाना के कामों का डिसिप्लिन मेनटेन रखने के लिए रोज़ या हफ़्ते में एक बार (या किसी हद तक महीने में एक बार) की बुनियाद पर ज़रूरी, ज़्यादा ज़रूरी और जिन्हें बहुत जल्दी होना है, उन कामों की एक लिस्ट बनाईये। यह लिस्ट आपकी ज़िन्दगी को डिसिप्लिन देने में काफ़ी मदद दे सकती है। अगर आपने दिन भर का प्रोग्राम पहले से बना लिया होगा तो आप हर दिन को डिसिप्लिन के साथ बिताने में और उसे फ़ायदेमन्द बनाने के क़ाबिल हो जाएंगी।

दिन की शुरुआत जल्दी कीजिए

हर रोज़ सुबह बिस्तर से जल्दी उठ जाया कीजिए। बड़ों से आपने यह ज़रूर सुन रखा होगा कि अगर कोई सेहतमन्द, दौलतमन्द और हमेशा चुस्त रहना चाहता है तो उसे रात में जल्दी सोने और सुबह जल्दी उठने को अपनी आदत बना लेना चाहिए। अपने रोज़ाना के कामों का एक शेड्यूल बनाईये, फिर दिन भर ख़ुद को उसके मुताबिक़ ही चलाईये। साथ ही अपने सोने और उठने का वक़्त भी फ़िक्स कर दीजिए। सुबह जल्दी उठना न सिर्फ़ जिस्मानी ही नहीं बल्कि दिमाग़ी तौर पर भी काफ़ी फ़ायदेमन्द होता है।

सोच पाज़िटिव रखिये

ऐसी चीज़ों की लिस्ट बनाईये जो आपको ख़ुशी और उम्मीद देती हैं। इस तरीक़े से आप अपने स्ट्रेस से पाज़िटिव अन्दाज़ में जान छुड़ा सकती हैं। यह ख़ुद को पाज़िटिव बिहेवियर और पाज़िटिव कामों से जोड़े रखने का एक अच्छा तरीक़ा है जैसे आपको अपने सगे रिश्तेदारों (बहन, भाईयों वग़ैरा) से हफ़्ते, दो हफ़्ते में मिलना अच्छा लगता है, समाजी भलाई के कामों का हिस्सा बनना पसन्द है वग़ैरा-वग़ैरा। घर के काम-काज में हाथ बटाने से भी आपको सूकून और दिमाग़ी ख़ुशी महसूस होती है। आप ऐसी सभी चीज़ों की लिस्ट बनाईय और फिर पक्के इरादे के साथ ऐसे कामों में ख़ुद को बिज़ी रखिये।

सादगी अपनाईये

अपने लाइफ़ स्टाइल से इंज्वाए करने और दबाव से दूर रहने के लिए पीचीदगियों में मत उलझिए बल्कि अपनी ज़िंदगी में सादगी अपनाइए। क्या आपको पता है कि ज़िन्दगी की उलझनें और कठिनाईयाँ किस चीज़ से बढ़ती हैं? स्क्रीन यानी टी.वी., लैपटॉप, टैबलेट्स और स्मार्ट फ़ोन्स ज़िन्दगी को मुश्किल बनाने का सबसे बड़ा ज़रिया बने हुए हैं मगर मुश्किल यह है कि आज के पीरियड में इस से दूर रहना लगभग नामुमकिन है। लेकिन आप यह कर सकती हैं कि जिस वक़्त आप अपने ज़रूरी काम करने में बिज़ी हों तो उस वक़्त इन स्क्रीन्स को अपने आप से दूर कर दीजिए।

चैलेन्जेस का मुक़ाबला करना सीखिये

जब कभी भी आप ख़ुद को ऐसी

सिचुवेशन में पाएं जिसकी आपको उम्मीद नहीं थी या आपके कुछ फ़ैसले आपको मुश्किल हालात में ला खड़ा करें तो अपनी ग़लतियों को फ़ौरन एक्सेप्ट कर लीजिए और उन पर कुढ़ने के बजाए उन से निकलने का रास्ता तलाश करने की कोशिश कीजिए। जब आप अपनी ग़लतियों और मुश्किलों को मान लेती हैं तो यह आपके दिमाग़ और सोच पर अच्छा असर डालती हैं। यह प्रेक्टिस आपको फ़्यूचर की अनदेखी मुश्किल भरी सिचुवेशन का अच्छी तरह मुक़ाबला करने के लिए तैयार करती है।

कामों को टालना छोड़िये

कहते हैं कि कल कभी नहीं आता, इसलिए कोई भी काम कल पर मत छोड़िये। जो काम आपके ज़िम्मे है, उसे किसी भी तरह जल्दी से जल्दी निमटाने की कोशिश कीजिए। आज किसी भी काम में सुस्ती का नतीजा कल स्ट्रेस और शर्मिन्दा होने के रूप में आपके सामने आएगा।

आराम के लिए वक़्त निकालिये

अपने जिस्म और दिमाग़ को खोलिये। जब आप स्ट्रेस का सामना कर रही होती हैं तो आप न सिर्फ़ बहुत कम सो पाती हैं बल्कि आपकी साँसें भी उखड़ने लगती हैं। काम में लगातार बिज़ी रहना भी इन्सान को तोड़ कर रख देता है। इसलिए यह बात अपने दिमाग़ में रखिये कि आपने काम से फ्री होकर अपने लिए भी कुछ वक़्त निकालना है। इस तरह आप सुकून में रहेंगी और अच्छा महसूस करेंगीं।

अपने कामों पर पूरा ध्यान रखिये

अच्छी ज़िन्दगी बिताने के लिए अपने कामों पर ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। कोई भी काम करते वक़्त उसकी तरफ़ जितना ज़्यादा ध्यान होगा उतना ही अच्छा रिज़ल्ट मिलेगा। अपने हर काम पर भरपूर ध्यान दीजिए और उसे पूरा करने में अपनी बेहतरीन कोशिशें और सलाहियतें लगा दीजिए। इस तरह आप अपने काम को जल्दी और सही ढंग से पूरा कर सकेंगी।

ख़ुश रहने की कोशिश कीजिए

रोज़ाना पाबन्दी से एक्र्सासाइज़ करना ख़ुश रहने का बेहतरीन सोंस साबित हो सकता है। एक्र्सासाइज़ आपके जिस्म में ''न्यूरो ट्राँस्मीटर्स'' और ''कार्टीसोल'' को पैदा होने से रोकती है। यह वह हार्मोन्स हैं जो इन्सान के जिस्म में स्ट्रेस पैदा होने की वजह बनते हैं। खाना भी मेनटेन कीजिए और दिमाग़ को फ़ालतू सोचों में मत उलझाए रखिये। ●

गुस्सा

इन्सान पर शैतानी कंट्रोल का एक हथियार गुस्सा भी है।

जब कोई गुस्सा करता है तो वह अपनी नार्मल हालत से बाहर निकल जाता है।

फिर न उसकी सोच सही से काम करती है कि अब जो होने वाला है उसे देख सके और न ही उसके काम अक़्ल के हिसाब से हो पाते हैं।

गुस्सा अक़्ल के रास्ते में आने वाला सबसे बड़ा पत्थर है जिसकी वजह से इन्सान न जाने कैसे-कैसे भयानक काम कर बैटता है और फिर बाद में पछताता है लेकिन उस वक़्त कुछ नहीं हो सकता, सिवाए इसके के शैतान दूर खड़ा हंस रहा हो।

इमाम अली[अ०] एक ख़त में हारिस हमदानी को लिखते हैं:

गुस्से से डरो क्योंकि यह शैतान के लश्करों में से एक बड़ा लश्कर है।

एक दूसरे ख़त में अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास को लिखते हैं:

गुस्से से बचो क्योंकि यह शैतान के लिए नेक शुगून है।

यह दोनों ख़त इमाम अली[अ०] ने अपने गवर्नरों को लिखे हैं और उन्हें याद दिलाया है कि कोई भी फ़ैसला गुस्से की हालत में न करना क्योंकि इसका नतीजा बहुत ख़तरनाक निकलता है।

एक और जगह इमाम अली[अ०] बताते हैं:

गुस्सा एक तरह की दीवानगी है क्योंकि गुस्सा करने वाला बाद में पछताता ज़रूर है और अगर उसे पछतावा नहीं होता तो फिर उसकी दीवानगी पक्की हो चुकी है।

हज़रत अली[अ०] ने एक जगह सख़्त मिज़ाजी और गुस्से से बचने की नसीहत करते हुए कहा:

जल्दबाज़ी से काम न लो,

और सज़ा देने में इतनी देर करो कि तुम्हारा गुस्सा कम हो जाए और तुम अपने ऊपर क़ाबू पा लो।

■ अब्बास मूसवी

कुछ बातें इमाम अली रज़ा अ० की ज़िन्दगी से

इल्म का समन्दर

इमाम अली रज़ा अ० के सहाबी अली बिन अबी हमज़ा बताएनी कहते हैं:

एक दिन हम लोग इमाम रज़ा अ० के पास बैठे हुए थे। इतने में तीस हब्शी ग़ुलाम आ गए। एक हब्शी ने अपनी ज़बान में इमाम अ० के साथ कुछ बातें कीं और इमाम अ० भी उसे उसकी ज़बान में जवाब देते रहे। इसके बाद इमाम अ० ने कुछ पैसे उस हब्शी को दे दिये। फिर कुछ बातें और कीं और इसके बाद वह सारे हब्शी उठ कर चले गये।

मैंने ताज्जुब से पूछा, ''आप उस हब्शी से उसकी ज़बान में बातें कर रहे थे। हम लोग तो कुछ समझ ही नहीं पाए। आप उन से क्या कह रहे थे ?''

इमाम अ० ने फ़रमाया, ''वह ग़ुलाम मुझे दूसरों से ज़्यादा समझदार लग रहा था। इसलिए मैंने उसे एक काम सौंपा था कि अपने दोस्तों व साथियों के मामलों को देखे, उनकी मुश्किलों के हल करने के बारे में सोचा करे और हर महीने हर एक को 30 दिरहम भी दिया करे। उस हब्शी ने मेरी मान ली थीं और इसी लिए मैंने उसे कुछ दिरहम भी दिये थे ताकि जैसा मैंने उससे कहा है उसके हिसाब से वह अपने दोस्तों में बांट दे।''

अली बिन हमज़ा बताएनी कहते हैं: इसके बाद इमाम अ० ने मुझ से कहा कि क्या उनके साथ जो कुछ मैंने किया है उस पर तुम्हें ताज्जुब है ?

नहीं! ताज्जुब मत किया करो क्योंकि मासूम इमाम का दर्जा लोगों की सोचों से बहुत ऊपर होता है। जो कुछ तुम ने देखा है यह एक परिन्दे की चोंच में उस एक बूंद पानी जैसा है जो वह समन्दर से उठाता है।

❋❋❋❋

काम से पहले मज़दूरी तय कर लो

सुलेमान बिन जाफ़र कहते हैं: एक दिन मैं इमाम रज़ा अ० के साथ किसी काम से घर से निकला और जब हम लोग वापस आए तो इमाम अ० ने फ़रमाया, ''आज रात मेरे घर ही ठहर जाओ और मेरे यहां मेहमान बन कर रहो।''

मैंने इमाम अ० की दावत क़ुबूल कर ली। अभी हम लोग घर के अन्दर जा ही रहे थे कि एक दूसरे सहाबी ''मुअत्तब'' भी आ गए।

जब हम लोग घर के अन्दर गये तो कुछ नौकर-चाकरों को देखा जो जानवरों के लिए घर बना रहे थे। एक काला आदमी गारा बना-बना कर दूसरों को दे रहा था।

इमाम अ० ने पूछा, ''यह कौन है ?''

कहा गया, ''यह हमारी मदद करने आया है। जब काम ख़त्म हो जाएगा तो हम इसे मज़दूरी भी देंगे।''

इमाम अ० ने पूछा, ''क्या तुम ने इस की मज़दूरी तय कर ली है ?''

उन्होंने कहा, ''नहीं! हम जो भी इसे देंगे वह राज़ी हो जाएगा।''

इमाम अ० इस बात पर बहुत नाराज़ हुए। मैंने आगे बढ़कर कहा, ''मौला! आप इतने नाराज़ क्यों हो रहे हैं ?''

इमाम अ० ने फ़रमाया, ''मैंने कई बार इन लोगों से कहा है कि इस तरह मज़दूर मत लाया करें बल्कि पहले उसकी मज़दूरी तय कर लिया करो, उसके बाद ही किसी को लाओ।''

इसके बाद इमाम अ० ने फ़रमाया, ''अगर तुम किसी से कोई काम लेना चाहते हो और उसकी मज़दूरी पहले से तय नहीं करते तो बाद में हो सकता है कि अगर तुम उसे उसकी मज़दूरी से ज़्यादा भी दोगो तो उसे कम ही लगेगी। लेकिन अगर पहले से मज़दूरी तय कर लोगो तो काम ख़त्म होने पर जब उसे उसकी मज़दूरी दोगो तो वह तुम्हारा शुक्रिया अदा करेगा क्योंकि उसे उसकी पूरी मज़दूरी मिल चुकी होगी। अब अगर तुम उसे उसकी मज़दूरी से हटकर कुछ और भी दोगो तो वह उसको तुम्हारी तरफ़ से भलाई समझेगा और वह इस भलाई को कभी नहीं भूलेगा।

❋❋❋❋

11 ज़ीक़ाद
इमाम अली रज़ा अ० की विलादत मुबारक हो

अगर ख़ुदा और इमाम राज़ी हैं

एक दिन इमाम अली रज़ा[अ०] के कुछ सहाबी आप[अ०] के घर में इकट्ठा थे जिनमें यूनुस बिन अब्दुर्रहमान भी थे जो इमाम[अ०] के बहुत ख़ास सहाबी थे और इमाम[अ०] उन पर बहुत ज़्यादा भरोसा करते थे।

इमाम[अ०] अपने सहाबियों से बात कर ही रहे थे कि इतने में बसरा के कुछ लोगों ने इमाम[अ०] से मिलने की इजाज़त माँगी। इमाम[अ०] ने यूनुस से कहा, ''तुम उस कमरे में चले जाओ और जब तक मैं न कहूँ कुछ न करना।''

इसके बाद इमाम[अ०] ने बसरे से अपने वालों अंदर बुला लिया। वह अन्दर आए तो यूनुस बिन अब्दुर्रहमान के ख़िलाफ़ शिकायतें करने लगे और उनकी बुराईयाँ करते हुए उन्हें बुरा-भला कहने लगे।

इमाम[अ०] अपना सर झुकाए हुए बैठे थे और बिल्कुल चुप थे। यहाँ तक कि बसरे वाले उठ कर चले गये और इसके बाद आप[अ०] ने यूनुस बिन अब्दुर्रहमान को बाहर बुला लिया।

यूनुस उनकी बातें सुन कर बहुत दुखी हुए और रोते हुए इमाम से बोले, ''मौला! मैं आप पर क़ुर्बान हो जाऊँ! मैं इन्हीं लोगों के साथ रहता हूँ लेकिन मैं नहीं जानता था कि यह लोग मेरे बारे में ऐसी बातें करेंगे और मुझ पर इस तरह इल्ज़ाम लगाएंगे।''

इमाम ने मोहब्बत भरे अन्दाज़ में यूनुस से कहा, ''ऐ यूनुस! दुखी न हो। लोगों को यह सब कहने दो और और जान लो कि इन बातों की कोई अहमियत नहीं है। जब तुम्हारा इमाम[अ०] तुम से राज़ी है तो फिर दुखी होने की कोई बात नहीं है।

ऐ यूनुस! हमेशा लोगों के साथ उनकी मारेफ़त के हिसाब से बात किया करो। जैसी उनकी मारेफ़त हो उसी हिसाब से ख़ुदा के दीन बारे में उन्हें समझाया करो और ऐसी बातें समझाने से बचा करो जो उनकी समझ से ऊपर हों।

ऐ यूनुस! अगर तुम्हारे हाथ में एक बड़ा ही क़ीमती हीरा हो और लोग कह दें कि यह पत्थर या ढेला है तो उनकी बातें तुम पर कितना असर डालेंगी? और क्या लोगों की इस तरह की बातों से तुम्हें कोई फ़ायदा या नुक़सान पहुँचेगा?''

जब यूनुस को इमाम[अ०] की बातों से सुकून मिला तो उन्होंने कहा, ''नहीं! उनकी बातें मेरे लिए अहमियत नहीं रखतीं।''

फिर इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''इसी तरह जब तुम ने अपने इमाम की मारेफ़त पा ली हो और जब तुम ने हक़ीक़ीत को समझ लिया हो तो लोगों की बातों का तुम पर कोई असर नहीं होना चाहिए, वह चाहे जो भी कहें।''

❋❋❋❋

नेकी और ख़ैरात छुप कर

इमाम रज़ा[अ०] के सहाबी यसअ् इब्ने हमज़ा कहते हैं:

एक दिन इमाम रज़ा[अ०] के पास अलग-अलग जगहों और अलग-अलग नज़रियों के लोग बैठे थे। वह सब हलाल व हराम के बारे में सवाल पूछ रहे थे और इमाम[अ०] उनके जवाब दे रहे थे। इस बीच एक लम्बा सा आदमी खड़ा हुआ और सलाम करने के बाद बोला, ''ऐ अल्लाह के रसूल[स०] के बेटे! मैं आपके दोस्तों और अहलेबैत[अ०] का चाहने वाला हूँ। इस वक़्त मैं मुसाफ़िर हूँ, लेकिन मेरे पैसे और सामान खो गया है। अगर हो सके तो मेरी मदद कर दीजिए ताकि मैं अपने शहर मशहद तक आसानी से पहुँच जाऊँ। अल्लाह का दिया मेरे पास सब कुछ है, इसलिए मैं अपने घर पहुँच कर आप से लिए हुए पैसे आपकी तरफ़ से सदक़े के तौर पर ग़रीबों में बाँट दूंगा।

इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''अल्लाह तआला तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत करे, यहीं बैठे रहो।''

इसके बाद इमाम[अ०] लोगों के साथ बात करने लगे और उनके सवालों के जवाब देने लगे। कुछ देर के बाद वह सब लोग उठ कर चले गये लेकिन मैं, सुलेमान जाफ़री और ख़ैसमा वहीं बैठे रहे।

इमाम[अ०] उठ कर एक कमरे में चले गये और कुछ देर बाद उन्होंने दरवाज़े के पीछे से आवाज़ देकर कहा, ''वह मशहद वाला आदमी कहाँ है?''

उसने कहा, ''मैं यहीं हूँ मेरे मौला!''

इमाम[अ०] ने उसे दरवाज़े की तरफ़ बुलाया और दरवाज़े के पीछे से दो सौ दिरहम देते हुए फ़रमाया, ''यह दो सौ दिरहम हैं; इन्हें संभाल कर रखो और इनके सहारे वापस घर चले जाओ। मेरी तरफ़ से सदक़ा देने की भी ज़रूरत नहीं है।'' और फिर कहा, ''अब जल्दी से चले जाओ ताकि हम एक-दूसरे को न देख सकें!''

वह आदमी बाहर निकला और चला गया।

इसके बाद इमाम[अ०] बाहर आकर हमारे साथ बैठ गये।

सुलेमान जाफ़री ने कहा, ''मौला! आपने ऐसा क्यों किया? उस आदमी के साथ हमदर्दी की और उसकी मदद भी की मगर फिर उस से अपना चेहरा क्यों छुपा लिया?''

इमाम[अ०] ने कहा, ''मैं नहीं चाहता था कि वह मेरे सामने शर्मिन्दा हो या कहीं उसे अच्छा न लगे। क्या तुम लोगों ने नहीं सुना है कि अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया है कि दूसरों से छुप कर नेकी करने वाले को सत्तर क़ुबूल हज का सवाब दिया जाएगा।''

●●

■ अबू यह्या

एक दुआ

मेरे एक जानने वाले हैं और वह जब भी कोई दुआ करते हैं तो सबसे पहले वह कुछ यूँ कहते हैंः

''या अल्लाह! जिस तरह मुझे इस सच्चाई में कोई शक नहीं है कि मुझे या किसी को भी जो नेमत मिलती है उसका देने वाला सिर्फ़ तू है, उसी तरह मुझे इस बात का भी पूरा भरोसा है कि जिसको जो कुछ भी मिलता है वह उसकी किसी अच्छाई की वजह से नहीं मिलता है बल्कि सिर्फ़ तेरी अच्छाईयों की वजह से मिलता है। मैं तेरी हर नेमत पर तेरा शुक्र अदा करता हूँ और तेरी हर अच्छाई पर तेरी हम्द व तारीफ़ करता हूँ।''

यह बातें अल्लाह की मारेफ़त से भरी हुई हैं। यह हमें उस सच्चाई के बारे में बता रही हैं जो इस दुनिया में हमारे चारों तरफ़ फैली हुई है। यह वह सच्चाई है जिसे हम तौहीद कहते हैं। ख़ुदा को एक मानना जितनी बड़ी बात है उतनी ही बड़ी बात यह भी है कि उसे ही हर नेमत, हर अच्छाई और हर भलाई का दाता माना जाए।

अगर पहली वाली बात का इनकार कर दिया जाए तो इंसान मुश्रिक हो जाता है और अगर दूसरी वाली बात को अंदेखा कर दे तो ख़ुदा को भूल जाने या कम से कम उस से मुँह मोड़ लेने की सोच जन्म ले लेती है। शिर्क वाली बात को तो अकसर लोग जानते हैं लेकिन दूसरी वाली बात हर एक की समझ में नहीं आती है। इसी लिए आज कल अकसर लोग इस प्रॉब्लम में फंसे नज़र आते हैं।

इन्सान जब इस दुनिया में आँख खोलता है तो उसे अपने आस पास अनगिनत नेमतें दिखाई पड़ती हैं। यह नेमतें इतनी ज़्यादा होती हैं कि अगर इन्सान सारी ज़िन्दगी उन्हें गिनता रहे तो ज़िन्दगी तो ख़त्म हो जाएगी मगर यह नेमतें ख़त्म नहीं होंगी।

ऐसा होने पर होना तो यह चाहिए था कि उसकी ज़बान से वही बातें निकलतीं जिनके बारे में अभी ऊपर हमने बात की है मगर इन्सान का मामला बड़ा अजीब है। वह सिर्फ़ उन नेमतों को नेमत समझता है जो उसके पास नहीं होतीं। जैसे नेमत का मतलब उसकी नज़र में यह होता है कि वह चीज़ जो दूसरों के पास है उसे भी मिल जाए तो वह उसे नेमत समझता है।

अगर किसी आदमी के अंदर यह सोच जन्म ले ले तो फिर वह ऐसे-ऐसे काम करेगा जिन कामों की उम्मीद किसी ऐसे आदमी से नहीं की जा सकती जो ख़ुदा को मानने वाला और उसकी इबादत करने वाला हो।

जैसे आज कल का सब से बड़ा इशू ग़रीबी और पैसों की कमी है। आमदनी के मुक़ाबले में लोगों के ख़र्चे इतने बढ़ गये हैं कि ज़िन्दगी बिताना मुश्किल हो चुका है। ऐसे में लोग शिकवे-शिकायतें करना शुरु कर देते हैं। मिज़ाज में चिड़चिड़ापन आ जाता है।। दूसरों और ख़ास कर छोटों या अपने नीचे काम करने वालों के साथ बुरा बर्ताव करने लगते हैं। ख़ुदा से भी नाराज़ हो जाते हैं और कहते हैं कि ऐ ख़ुदा! तू ने हमें दिया ही क्या है। ज़ाहिर है कि इसके बाद अल्लाह का शुक्र ही क्यों करने लगे। आख़िर में अल्लाह की इबादत से दिल भी खट्टा कर लेते हैं।

ऐसे में कोई उन से पूछे कि अगर ख़ुदा

उन्हें सारी दुनिया के ख़ज़ाने दे दे और सिर्फ़ उनकी आँखें छीन ले तो क्या वह यह सौदा पसन्द करेंगे ? क्या वह चाहेंगे कि मंहगी-मंहगी गाड़ियों में तो बैठें लेकिन बैसाखियों के सहारे ?क्या वह लाखों-करोड़ों रुपये के ऐसे बैंक अकाउण्ट रखना पसन्द करेंगे जिनकी चेकबुक तो उनके पास हो मगर उन पर साइन करने वाले हाथ न हों ? क्या वह चाहेंगे कि उन्हें बंगले और प्रॉपर्टी तो मिल जाए लेकिन बाल-बच्चे ले लिए जाएं ? सीधी सी बात है कि कोई भी यह नहीं चाहेगा।

फिर लोगों से यह पूछना चाहिए कि क्या वह पचास साल तक हर तरह के आराम भरी ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारना पसन्द करेंगे जिसके बाद, ज़्यादा नहीं सिर्फ़ पचास हज़ार साल तक जो आख़िरत के एक दिन के बराबर हैं, आग में जलना पड़े ?

अगर जवाब ''नहीं'' में है तो फिर ऐसे से बस इतना ही कहा जा सकता है कि आप अपने मेहरबान ख़ुदा की नाशुक्री मत करो। उस करीम ख़ुदा के एहसानों को मत भूलो जो तुम्हें सत्तर माँओं से भी ज़्यादा चाहता है। जिस ने बिन माँगे हमें इतना कुछ दे दिया है कि जो न किसी ने आज तक किसी को दिया है और न ही कोई किसी को दे सकता है।

इस दुनिया में जिसको अच्छी औलाद मिल जाए वह ख़ुश नसीब गिना जाता है। जिसे अच्छा शौहर या बीवी मिल जाए, अच्छा टीचर मिल जाए, अच्छा दोस्त मिल जाए, अच्छा आफ़िसर मिल जाए या अच्छा पड़ोसी मिल जाए उसे ख़ुश क़िस्मत माना जाता है।

लेकिन अच्छे नसीब वाला इन्सान वह है जिसे अच्छा रब (पालने वाला) मिल गया है। इन्सानों का रिश्ता एक ऐसी हस्ती से है जिसकी तरफ़ से उन्हें हर हाल में भलाई ही पहुँचेगी और यह भलाई वह लोगों को उनकी अच्छाईयों की वजह से नहीं देता बल्कि अपनी अच्छाईयों की वजह से देता है। ●

■ जाफ़र नासिरी

हज़रत अबूज़र की एक दुआ

एक बार मैं अपने बाबा के साथ आयतुल्लाह बहजत से मिलने के लिए गया। वहाँ दूसरे उलमा भी बैठे हुए थे और आपस में बातें हो रही थीं। आयतुल्लाह नासिरी कहने लगे कि मैं आयतुल्लाह सैय्यद जमाल गुलपाएगानी को बहुत चाहता था और उन से मुझे काफ़ी लगाव था। मेरा उनसे यह लगाव उस वक़्त से था जब मैं एक स्टूडेंट था। मुझे उनकी सारी बातें, आदतें, काम और उनके ख़ास-ख़ास जुमले बहुत पसन्द थे। मैं उनके पीछे नमाज़ पढ़ने जाया करता था। मुझे याद है वह नमाज़ में बहुत आराम से और धीमे लहजे में यह दुआ पढ़ते थेः

''ऐ ख़ुदा! मैं तुझ से अमन की, तुझ पर ईमान की, तेरे पैग़म्बर[स०] का साथ देने की, हर तरह की मुसीबत से बचाव की, आसानियों पर शुक्र की और बुरे लोगों का मोहताज न बनाने की दुआ करता हूँ।''[1]

आयतुल्लाह बहजत ने उनकी बात सुनने के बाद कहाः ''जी हाँ! यह हज़रत अबूज़र की दुआ है।''

फिर उन्होंने कहाः ''एक बार हज़रत अबूज़र अल्लाह के नबी[स०] के पास पहुँचे तो देखा कि अल्लाह के रसूल[स०] अपने सहाबी दह्या कल्बी के साथ बातें कर रहे हैं। हज़रत अबूज़र यह सोच कर थोड़ी दूर खड़े हो गये कि शायद दह्या कल्बी अल्लाह के रसूल[स०] से अपनी कोई निजी बात कर रहे होंगे लेकिन अल्लाह के रसूल[स०] जिस से बात कर रहे थे वह दह्या नहीं थे बल्कि हज़रत जिबरईल थे जो दह्या की शक्ल में अल्लाह के रसूल[स०] के पास आए थे। जिबरईल ने पैग़म्बर[स०] से कहाः ऐ अल्लाह के रसूल! अगर अबूज़र हमें सलाम करते तो हम ज़रूर उनके सलाम का जवाब देते। फिर जिबरईल ने बताया कि ऐ अल्लाह के रसूल! अबूज़र एक ऐसी दुआ पढ़ते हैं जिसकी वजह से वह आसमान वालों में बहुत मशहूर हो गये हैं और वह दुआ यह हैः

फिर जिबरईले उसी तरह दह्या कल्बी की शक्ल में ही लौट गये और इसके बाद अबूज़र अल्लाह के रसूल[स०] के पास आए। अल्लाह के रसूल[स०] ने अबूज़र से पूछाः अबूज़र हमारे पास क्यों नहीं आए थे ? अबूज़र बोलेः ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने देखा कि आप दह्या कल्बी के साथ बात कर रहे हैं, इसलिए मैं नहीं चाहता था कि आप दोनों के बीच आकर बातों का सिलसिला तोड़ दूँ। अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया कि वह दह्या नहीं थे बल्कि जिबरईल थे जो दह्या की शक्ल में आए थे और कह रहे थेः अगर अबूज़र हमें सलाम करते तो हम ज़रूर जवाब देते। जिबरईल ने यह भी बताया कि तुम कोई दुआ पढ़ते हो जिसकी वजह से तुम आसमान वालों में काफ़ी मशहूर हो गये हो।

अबूज़र ने वह दुआ अल्लाह के रसूल[स०] के सामने भी पढ़ी लेकिन उन्हें इस बात का बहुत दुख था कि हज़रत जिबरईल के साथ बात करने का एक अच्छा मौक़ा उनके हाथ से निकल गया जिसकी वजह से अबूज़र कई दिन तक अपने घर से बाहर नहीं निकले थे।

1-काफ़ी, 2/587 व बिहार, 22/401

■ आयतुल्लाह दस्तग़ैब शीराज़ी

माँ–बाप की ख़िदमत जिहाद से बढ़कर है

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल[स०] के पास आकर बोला, ''मैं ख़ुदा के रास्ते में जिहाद करना चाहता हूँ।'' आपने फ़रमाया, ''तो फिर जिहाद करो। यक़ीन जानो! अगर तुम मारे गये तो अल्लाह के यहाँ ज़िन्दा रहोगे और रिज़्क़ पाओगे। तुम्हारा अज्र भी ख़ुदा के ज़िम्मे होगा। अगर सलामती के साथ लौट आए तो गुनाहों से इस तरह पाक हो जाओगे जिस तरह बच्चा माँ के पेट से पैदा होता है।''

उस ने कहा, ''अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप ज़िन्दा हैं और बहुत बूढ़े हैं, उन्हें मुझ से बहुत ज़्यादा लगाव भी है। मुझ से अलग हो पाना उनके लिए बहुत कठिन होगा।''

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया, ''अगर ऐसा है तो उनकी ख़िदमत के लिए रुक जाओ। उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथों में मेरी जान है, माँ-बाप के साथ एक दिन और एक रात का लगाव, एक साल के लगातार जिहाद से बेहतर है।''

अल्लाह के रसूल[स०] ने फ़रमाया है:

''माँ-बाप की ख़िदमत करके जन्नत में अपनी जगह बना लो और अगर माँ की तरफ़ से आक़ हो गये (उन्होंने तुम्हें ख़ुद से अलग कर दिया) तो फिर जहन्नम तुम्हारा ठिकाना बन जाएगा।''

माँ-बाप से नेकी करना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है

माँ-बाप के साथ नेकी करना बहुत सारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है। जैसा कि हदीस में आया है कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल[स०] से कहा, ''अल्लाह के रसूल! ऐसा कोई भी बुरा काम नहीं बचा है जो मैंने न किया हो। क्या मेरे लिए अब भी तौबा का दरवाज़ा खुला है?''

रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया है, ''जाओ! अपने माँ-बाप के साथ नेकी करो ताकि तुम्हारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा हो सके।''

उसने कहा, ''अल्लाह के रसूल! मेरी माँ नहीं है।''

आपने फ़रमाया, ''तो बाप के साथ नेकी करो ताकि तुम्हारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा हो।''

जब वह चला गया तो आप ने फ़रमाया, ''अगर इसकी माँ ज़िन्दा होती तो उसके साथ नेकी करना ज़्यादा बेहतर होता।''

माँ-बाप को ख़ुश करना ख़ुदा को ख़ुश करना है

अल्लाह के रसूल[स०] फ़रमाते हैं:

''माँ-बाप के ख़ुश होने में अल्लाह की ख़ुशी और उनकी नाराज़गी में अल्लाह की नाराज़गी है।''

रसूले इस्लाम[स०] ने यह भी फ़रमाया है:

''माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला जन्नत में नबियों से सिर्फ़ एक दर्जे के फ़र्क़ पर होगा और माँ-बाप को नाराज़ करने वाला जहन्नम में फ़िरऔनों से सिर्फ़ एक दर्जे नीचे होगा।''

माँ-बाप के साथ नेकी करने वाले के लिए फ़रिश्तों की दुआएं

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

''माँ-बाप के साथ नेकी करना ख़ुदा की तरफ़ से वाजिब की जाने वाली चीज़ों में से एक अहम वाजिब है।''

रसूले ख़ुदा[स०] फ़रमाते हैं: ''ख़ुदा के दो फ़रिश्ते पैदा किये गये हैं, जिनमें से एक कहता है:

ख़ुदाया माँ-बाप के साथ नेकी करने वालों को (हर मुसीबत) से बचाए रख!

और दूसरा फ़रिश्ता कहता है:

''ख़ुदाया जिन लोगों से उनके माँ-बाप नाराज़ हैं, उन्हें अपने ग़ज़ब के ज़रिये हलाक कर दे!''

ध्यान रहे कि फ़रिश्तों की दुआ ख़ुदा की बारगाह में ज़रूर क़ुबूल होती है।

माँ-बाप की दुआ जल्दी क़ुबूल होती है

माँ-बाप बच्चों के अच्छे बर्ताव या बुरे बर्ताव के नतीजे में जो भी दुआ करते हैं, वह ख़ुदा की बारगाह में ज़रूर क़ुबूल होती है। इस बारे में मासूम इमामों ने बहुत कुछ कहा है जिसमें से एक हदीस, दुआए मश्लूल के बारे में बयान हुई है।

एक नौजवान का सीधा हाथ उसके बाप की बद्दुआ की वजह से बेकार हो गया था। वह नौजवान बाप के मरने के बाद लगातार तीन साल तक मस्जिदुल हराम में सारी रात ख़ुदा के सामने गिड़गिड़ा कर दुआएं करता था। एक दिन हज़रत अली[अ०] को उस नौजवान पर तरस आ गया। फिर आप ने उसे दुआए मश्लूल सिखाई। वह नौजवान इस दुआ की बरकत से शिफ़ा पा गया था।

माँ; अच्छे बर्ताव की सबसे ज़्यादा हक़दार है

माँ के साथ अच्छाई करने का बहुत सवाब है जैसा कि अल्लाह के रसूल[स०] ने तीन बार माँ के साथ नेकी करने के लिए कहने के बाद चौथी बार बाप के साथ नेक बर्ताव करने का हुक्म दिया है।

अल्लाह के रसूल[स०] से पूछा गया कि माँ-बाप में किसका हक़ ज़्यादा है?

आपने फ़रमायाः ''क्या माँ वही हस्ती नहीं है जिसने एक लम्बे वक़्त तुम्हें अपने पेट में उठाए रखा है और फिर तुम्हारे जन्म की सख़्तियाँ भी झेली हैं? फिर तुम्हें दूध भी पिलाया है? इसलिए माँ का हक़ सबसे ज़्यादा है।

● ● ●

जिसकी क़ब्र तूस में बनेगी...

■ यावर अब्बास रिज़वी

देबिल ख़ुज़ाई तीन इमामों यानी इमाम मूसा काज़िम[अ०], इमाम अली रज़ा[अ०] और इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] के सहाबी रहे थे। देबिल कूफ़े के एक बहादुर ख़ानदान से थे। देबिल अपनी शायरी की वजह से बहुत मशहूर थे। आज तक भी उन्हें अहलेबैत[अ०] का शायर कहा जाता है। उनकी शायरी की धार तलवार से भी ज़्यादा तेज़ थी और दुश्मनों के ख़िलाफ़ ऐसे चलती थी जैसे जंग के मैदान में कोई बहादुर सिपाही तलवार चलाता है।

देबिल एक तरफ़ अपने शायरी के ज़रिये अहलेबैत[अ०] के फ़ज़ायल लोगों को सुनाया करते थे और दूसरी तरफ़ अहलेबैत[अ०] के दुश्मनों की बुराईयों और जुल्म के चर्चे भी करते थे। ख़ास कर अब्बासी ख़लीफ़ाओं के ख़िलाफ़ उन्होंने खुल कर शायरी की थी। इसी वजह से उन्हें कई बार एक शहर से दूसरे शहर भागना पड़ा था। आख़िर में 97 साल की उम्र में उन्हें इसी वजह से शहीद कर दिया गया था।

उनका एक क़सीदा ''क़सीद-ए-ताईया'' के नाम से मशहूर है जिसे उन्होंने पहली बार इमाम रज़ा[अ०] को सुनाया था। एक दिन देबिल इमाम रज़ा[अ०] के पास जाकर बोलेः ऐ अल्लाह के रसूल[स०] के बेटे! मैंने आप अहलेबैत[अ०] की शान में एक क़सीदा कहा है और मैं चाहता हूँ कि यह क़सीदा आपको पढ़ कर सुनाऊँ।

इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''हाँ! सुनाओ।''

देबिल ने इमाम[अ०] के सामने क़सीदा सुनाना शुरु किया और जब इस शेर पर पहुँचेः

''देख रहा हूँ कि जो काम अहलेबैत[अ०] के करने के थे वह उन लोगों के बीच बट गये हैं जिन्हें कुछ भी नहीं आता''; तो इमाम[अ०] रोने लगे।

रोते-रोते बोले, ''सच कहा तुम ने ऐ देबिल! ''

और जब देबिल ने यह शेर पढ़ा कि-

''जब अहलेबैत[अ०] सख़्तियों में घिरे हैं और जब अपना हक़ वापस लेने के लिए अपना हक़ छीनने वालों के पास जाते हैं तो वह लोग किसी भी तरह के हक़ को वापस देने से इनकार कर देते हैं और अहलेबैत[अ०] के हाथ ख़ाली रहते हैं'', तो इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''बेशक! ख़ुदा की क़सम! उन्होंने हमारे सारे हक़ छीन लिए हैं

और जब देबल ने यह शेर पढ़ा किः

''बेशक! मैं दुनिया में आज के हालात से डर रहा हूँ लेकिन मुझे उम्मीद है कि मौत के बाद अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत की बरकत से मैं अमान और आसानियाँ पा लूँगा।'' तो इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमायाः

''ऐ देबिल! ख़ुदा तुम्हें क़यामत की सख़्तियों और मुश्किलों से अमान में रखे!''

फिर जब देबिल ने दूसरे अइम्मा[अ०] की क़ब्रों का ज़िक्र करने के बाद यह शेर पढ़ाः

''नफ़्से ज़किय्यह (इमाम काज़िम[अ०]) की क़ब्र बग़दाद में है। ख़ुदा ने उन्हें बहुत बुलंद मुक़ाम दिया है।''

तो इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''ऐ देबिल! क्या तुम चाहोगे कि मैं भी दो शेर तुम्हारे क़सीदे में जोड़ दूँ ?''

WHATSAPP
CORNER

लोग नमाज़ क्यों नहीं पढ़ते ?

एक दोस्त ने अपने नमाज़ पढ़ने की वजह कुछ यूँ बताई ...
बहुत आसानी से मैं भी नमाज़ी बन गई।
एक दिन मैं क्लास में बैठी थी। उस दिन हमारी क्लास में इस्लामिक टीचिंग्स पढ़ाई जा रही थीं।
जब क्लास टीचर आए तो उन्होंने स्टूडेंट्स से सवाल किया...
बच्चो! आपकी नज़र में कौन लोग नमाज़ नहीं पढ़ते ?
एक स्टूडेंट ने बड़ी मासूमियत से कहा...
जो लोग मर गये हैं वही नमाज़ नहीं पढ़ते।
दूसरे स्टूडेंट ने थोड़ा सा शर्माते हुए जवाब दिया...
जिन लोगों को नमाज़ पढ़ना नहीं आती।
तीसरा बच्चा अपनी जगह से खड़ा हुआ और उसने बड़ा ही अच्छा जवाब दिया...
जो लोग मुसलमान नहीं हैं वह नमाज़ नहीं पढ़ते।
इसी तरह एक और बच्चे ने जवाब दिया...
जो लोग मुश्रिक हैं वह नमाज़ नहीं पढ़ते।
पाँचवे बच्चे ने जवाब दिया...
जो लोग ख़ुदा से नहीं डरते वह लोग नमाज़ नहीं पढ़ते।
सारे स्टूडेंट्स ने अपनी-अपनी बात कह दी थी...
लेकिन मैं सोंच में डूब गई थी कि...
मैं उनमें से कौन-सी हूँ ? ?
क्या मैं मर गया हूँ ?
क्या मुझे नमाज़ पढ़ना नहीं आती ?
क्या मैं अपने पालने वाले से नहीं डरता ?
क्या मैं मुसलमान नहीं हूँ ? ?
अल्लाह की पनाह!!
फिर मैं नमाज़ क्यों नहीं पढ़ती ?
मैं अपने आप से कहने लगी...
अगर क़ब्र की पहली रात मुझ से सवाल किया गया कि...
तुम ज़िन्दा थीं,
नमाज़ भी आती थी,
मुसलमान भी थीं,
अल्लाह से डरती भी थीं,
फिर भी तुम ने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी ?
तो मेरे पास क्या जवाब होगा ?
क्या कहूँगी मैं आख़िर ?
इसके बाद से तो मैं बहुत ही डर गई थी और रोने लगी थी...
फिर उसी दिन से मैंने एक पक्का फ़ैसला कर लिया कि...
चाहे कुछ भी हो जाए मैं अब कभी नमाज़ नहीं छोड़ूँगी। ●

देबिल ने कहा, ''क्यों नहीं मेरे मौला!''

इमाम ने फ़रमायाः

''एक क़ब्र तूस (मशहद) में है कि जिसके मालिक ने न जाने कैसी-कैसी मुसीबतें और ज़ुल्म झेले हैं। उसे ज़ुल्म के ज़हर ने आग लगा रखी है यहाँ तक कि वह क़यामत तक बेक़रार रहेगा।

जब ख़ुदा अपनी आख़िरी हुज्जत (इमामे ज़माना[अ०]) को भेजेगा तो वही हमारी यानी अहलेबैत[अ०] की मुसीबतों को ख़त्म करेंगे।''

देबिल ने पूछा, ''यह तूस में किसकी क़ब्र है और यह कौन है जो तूस में दफ़्न होगा ?''

इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''यह मेरी क़ब्र है और अब जल्दी ही तूस (मशहद) हम अहलेबैत[अ०] के मानने वालों और मेरे ज़ायरों का सेंटर बन जाएगा। इसलिए जिसने भी तूस में मारेफ़त के साथ मेरी ज़ियारत की उसे बख़्श दिया जाएगा और क़यामत के दिन उसे मेरे साथ उठाया जाएगा।''

इसके बाद इमाम[अ०] ने देबिल से फ़रमाया, ''थोड़ा इन्तेज़ार करो और यहीं बैठे रहो!''

इस के बाद इमाम[अ०] घर के अन्दर चले गये। कुछ देर बाद इमाम का ख़ादिम बाहर आया और उसने 100 दीनार देबिल को देते हुए कहा, ''मेरे मालिक ने कहा है कि यह तोहफ़ा अपने सफ़र के लिए रख लीजिये।''

देबिल ने कहा, ''ख़ुदा की क़सम! मैं यह लेने के लिए नहीं आया था।'' और पैसे वापस करते हुए बोले, ''अगर हो सके तो इमाम[अ०] का एक लिबास मुझे दे दिया जाए।''

ख़ादिम पैसे लेकर वापस इमाम[अ०] के पास चला गया। इसके बाद इमाम[अ०] ने वही पैसे फिर से अपने एक ख़ास लिबास के साथ देबिल के पास वापस भेज दिये और कहलवाया कि यह दीनार भी रख लो क्योंकि तुम्हें इनकी भी ज़रूरत पड़ेगी। इसके बाद देबिल ने ख़ुशी-ख़ुशी वह लिबास और वह दीनार ले लिये। ●

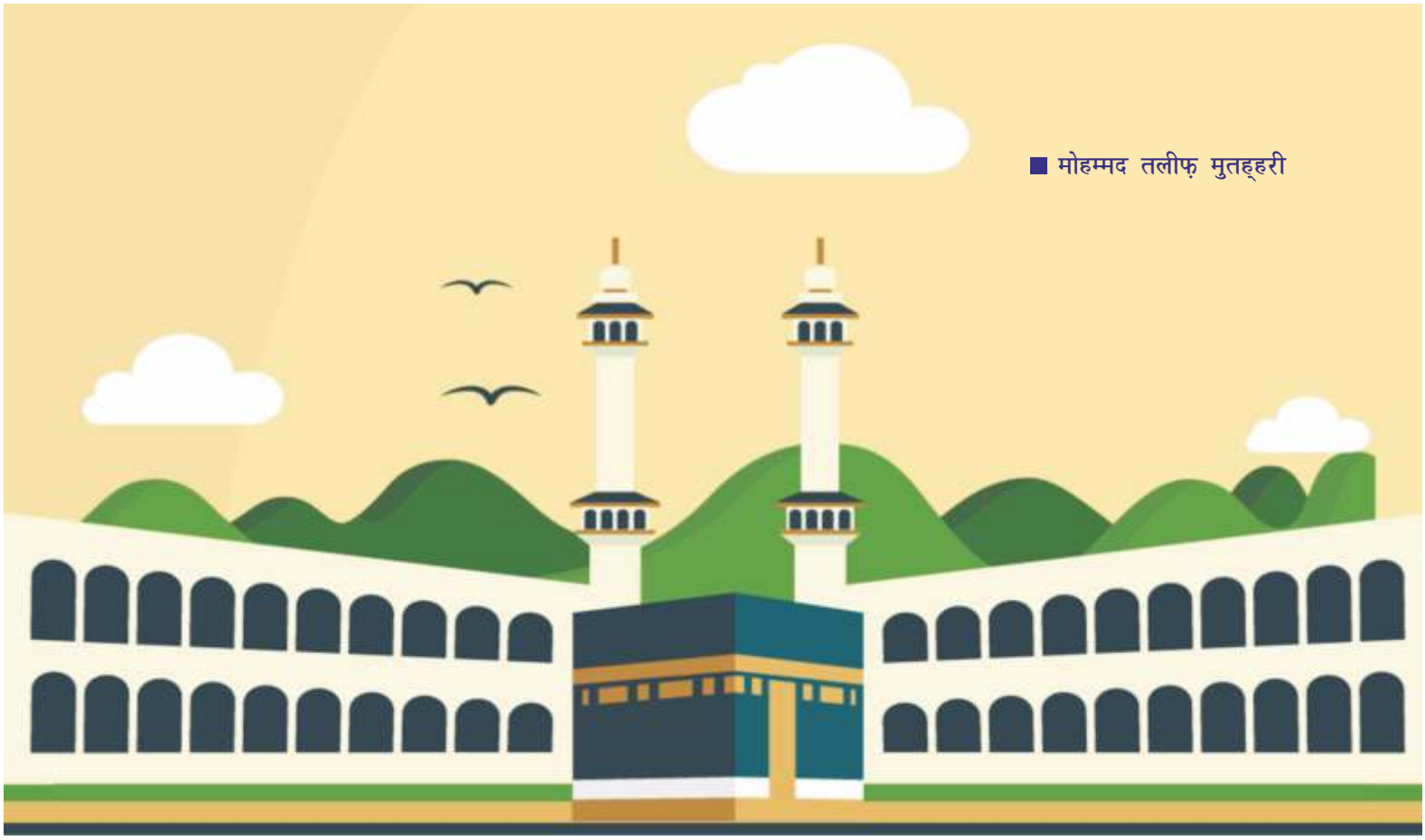

■ मोहम्मद तलीफ़ मुतह्हरी

इश्क़ का सफ़र

इन्सान के लिए कुछ मौक़े ऐसे भी आते हैं जिनमें वह सही मायनी में ख़ुदा की मर्ज़ी पा सकता है और अल्लाह से क़रीब हो सकता है। यही हर इन्सान की दिली चाहत भी होती है और होना भी चाहिए। हर इन्सान अपने नेचर के हिसाब से अच्छा और ख़ुदा को मानने वाला होता है लेकिन वक़्त व हालात की वजह से वह अपने ख़ुदा को भुला बैठता है लेकिन ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर जब उसे होश आ जाता है तो वह यह जान लेता है कि ख़ुदा के अलावा उसका कोई नहीं है। इन्सान की शुरु से ही यह कोशिश रहती है कि वह किसी न किसी तरीक़े से ख़ुदा की मर्ज़ी को पा ले और इबादतों के रास्ते अपने मालिक के यहाँ कोई बड़ा मुक़ाम पा ले।

ख़ुदा ने अपने बन्दों पर कुछ इबादतें वाजिब की हैं और ऐसा उसने इस लिए किया है ताकि इन्सान इन इबादतों के ज़रिये बड़े से बड़े मुक़ाम को भी पार कर ले। हर इबादत का अपना एक ख़ास वक़्त और एक ख़ास ज़माना होता है। कुछ इबादतें हर दिन की हैं और कुछ इबादतें ऐसी हैं जो साल में एक बार हैं और सिर्फ़ उन लोगों पर वाजिब हैं जो इन इबादतों की सारी शर्तों पर पूरा उतरते हैं।

एक ऐसी ही इबादत का नाम हज है। हज के बारे में हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं, ''जब तक ज़िन्दा हो अपने रब के घर की तरफ़ ध्यान रखो और उसे ख़ाली न छोड़ो क्योंकि अगर हज छोड़ दिया गया तो ख़ुदा तुम्हें वक़्त नहीं देगा।''

हज असल में हर तरह की पाबन्दी, हर तरह के काम और हर तरह के लगाव से अपने दिल को छुड़ा कर अपनी फ़ितरत की तरफ़ लौटने का नाम है लेकिन मुसीबत यह है कि इन्सान को उसकी ज़िन्दगी के काम, झूठी-सच्ची ज़रूरतें, तरह-तरह के लगाव और दूसरी रुकावटें उसके असली मक़सद और ज़िम्मेदारी से रोके रखती हैं।

हज सारे मुसलमानों का एक साथ एक जगह पर इकटठा होने और ख़ुदा के नाम पर उन सभी लोगों से मिलने का नाम है जो एक दीन को मानते हैं और एक ख़ुदा की इबादत करते हैं।

मीक़ात में जाना, लब्बैक कहते जाना, तवाफ़, नमाज़, सई, बाल कटवाना और साथ ही अरफ़ात, मशअर और मिना में ठहरना या जानवर की क़ुर्बानी करना... यह सब ऐसी इबादतें हैं जिनमें हज़ारों राज़ छुपे हैं।

लोगों की छोटी-छोटी मुसीबतें या उनके ख़ास फ़ायदे मुसलमानों की इस इंटरनेश्नल गेदरिंग में ग़ायब हो जाते हैं और उनकी जगह एक बड़ी और इंटरनेश्नल सोच या पालिसी जन्म ले लेती है।

हाजी जब हज करने जाते हैं तो इस इब्राहीमी हज में शरीक होने के साथ ही नबियों और रसूलों की हिस्ट्री से भी जुड़ जाते हैं और अपनी खोई हुई हैसियत को फिर से पाने की कोशिश करते हैं।

''लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक'' की पाक और पाकीज़ा आवाज़ उसे ख़ुदा से किये हुए वादे की याद दिलाती है।

इन्सान एहराम का सफ़ेद कपड़ा पहन कर अपने निजी फ़ायदों, दिखावे, दुनिया की नेमतों में डूब जाने और बुरी आदतों से आज़ाद होकर ख़ुदा से क़रीब हो जाता है। ख़ुदा के हुक्म और उसकी मर्ज़ी से जगह- जगह ठहरना और फिर चल पड़ना इन्सान को इब्राहीमी ज़िन्दगी का

रास्ता सिखाता है।

जानवर के गले पर छुरी फेरकर क़ुर्बानी पेश करते हुए इन्सान अपनी ख़्वाहिशों के गले पर भी छुरी फेरता है और फिर से ख़ुदा के घर के तवाफ़ के लिए निकल पड़ता है।

मिना में छोटे-बड़े शैतानों को कंकरियाँ मारते हुए वह हर तरह के शिर्क और शैतानी चालों से अपनी नफ़रत और दूरी का एलान करता है।

हज इसलिए नहीं है कि बस कुछ ख़ास जगहों और चीज़ों की ज़ियारत कर ली जाए बल्कि इसके पीछे ईसार, क़ुर्बानी, मोहब्बत और ख़ुलूस की एक सुनहरी हिस्ट्री है।

हज़रत इब्राहीम[अ०], हज़रत हाजरा[अ०] और हज़रत इस्माईल[अ०] जैसी बड़ी हस्तियों के ख़ुलूस व मज़बूत इरादों की बेमिसाल कहानी है।

हज एक भरपूर इबादत है और इसका सबसे बड़ा फ़ायदा गुनाहों की माफ़ी है। अल्लाह के रसूल[स०] फ़रमाते हैं, ''जो ख़ुदा के हुक्म पर चलते हुए सच्ची नियत से हज करता है और हज करते हुए गुनाहों और बुराईयों से बचता है, ऐसा इन्सान गुनाहों से इस तरह पाक होकर लौटता है जैसे अभी माँ के पेट से पैदा हुआ हो।''

हज जैसी इबादत में सभी इबादतों का निचोड़ मिला हुआ है। हज के लिए घर से निकलने से लेकर वापसी तक के सफ़र में नमाज़ के ज़रिये भी इन्सान ख़ुदा से क़रीब होता है। हज के लिए माल ख़र्च करना ज़कात जैसा काम है। अपनी ख़्वाहिशों और बुराईयों से बचना अपने अन्दर रोज़े जैसी क्वालिटी ले आता है। जब एक आदमी अपनों को छोड़ कर और दुनिया के कामों से मुँह मोड़ कर बिना सिले हुए कफ़न जैस कपड़े ओढ़ कर ''लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक'' कहते हुए ख़ुदा के घर पहुँचता है तो उसका यह सफ़र एक तरह से आख़िरत के सफ़र का नमूना बन जाता है।

अरफ़ात के मैदान में ठहरने से उसे वह ख़ुशख़बरी याद आ जाती है जिसमें ख़ुदा ने इस्लाम के रूप में मुसलमानों पर अपनी नेमतें उतारी हैं

मिना के मैदान में वह इस नियत के साथ अपने खुले दुश्मन शैतान को कंकड़ियाँ मारता है कि अगर अब यह मेरे और मेरे अल्लाह के बीच आने की कोशिश करेगा तो मैं उसे पहचानने में ग़लती नहीं करूँगा।

जब ख़ान-ए-काबा के सामने पहुँचता है तो उसकी रूह यह सोच कर खिल उठती है कि इस मुक़द्दस घर की ज़ियारत के लिए दिल बेचैन रहता था और अब वही अल्लाह का घर मेरे सामने है। अल्लाह से लौ लगाए रखने की यह हालत हाजी के दिल को सुकून और रूह को एक अजीब से ख़ुशी देती है।

हज ख़ुदा का हुक्म, हज़रत आदम की सुन्नत और हज़रत इब्राहीम[अ०] का तरीक़ा है। हज इन्सान और ख़ुदा के बीच होने वाले वादे के पूरा करने की जगह और हज़रत इब्राहीम[अ०] के रास्ते पर चलने वालों के लिए युनिटी का एक सेन्टर है।

हज शैतान और अपने नफ़्स से मुक़ाबले, शिर्क से दूरी और नबियों के रास्ते से जुड़े रहने का एलान है।

इब्राहीमी हज जो इस्लाम ने मुसलमानों को एक तोहफ़े के तौर पर दिया है यह हज हमें इज़्ज़त, रूहानियत, युनिटी और इज़्ज़त देता है। यह मुसलमानों का बुरा चाहने वालों और दुश्मनों के सामने मुस्लिम जगत की आन-बान-शान और अल्लाह की ताक़त पर उनके ईमान की निशानी है।

क़ुरआन फ़रमाता है: ''लोगों में हज का एलान कर दीजिए कि आपके पास पैदल चलने वाले और दुबले-पतले ऊँटों पर दूर-दूर के रास्तों से आएं ताकि अपने फ़ायदे के कामों के लिए इकटठा हों। और इन तय दिनों में ख़ुदा को याद करें।''[1]

यह आसमानी आवाज़ आज भी हमें बुला रही है और इतनी सदियाँ और ज़माने बीत जाने के बाद भी इन्सानों को तौहीद पर इकटठा होने की दावत दे रही है। यह इब्राहीमी दावत सभी इन्सानों के लिए है और यह इज़्ज़त सबको दी गई है।

वैसे यह भी हो सकता है कि कुछ कान इस आवाज़ को न सुन पाएं और अपनी जिहालत की मिट्टी के नीचे दबे कुछ दिल इसका एहसास न कर सकें, हो सकता है कि कुछ लोग अपने अन्दर इस इंटरनेश्नल गेदरिंग का हिस्सा बनने की सलाहियत पैदा न कर पाएं या किसी भी वजह से यह तौफ़ीक़ उन्हें हासिल न हो।

अरफ़ात, मशअर, मिना, सफ़ा व मरवह, ख़ान-ए-काबा, मस्जिदुल हराम व मस्जिदुन्नबी में से हर एक अपनी जगह रूहानी तरक़्क़ी की एक कड़ी है लेकिन सिर्फ़ उस हाजी के लिए जो इस तौफ़ीक़ की क़द्र जानता है और इस से अपने आप को पाक करना चाहता है और अपनी बची हुई उम्र के लिए रूहानी सामान इकट्ठा कर रहा है।

हज इस्लामी युनिटी का सबसे बड़ा नमूना है जो हमें ख़ानए काबा के आसपास नज़र आता है। ख़ाना काबा सब के लिए है।

''वहाँ उस जगह के रहने वाले और बाहर वाले दोनों बराबर हैं।''[2]

हमेशा और हर साल इस जगह पर और एक ख़ास वक़्त पर हज अपनी ख़ास ज़बान में दुनिया भर के मुसलमानों को युनिटी के लिए पुकारता है और यह काम इस्लाम के दुश्मनों की सारी चालों को मिट्टी में मिला देता है, जो हर ज़माने में और ख़ास तौर पर आज के ज़माने में, मुसलमानों को एक-दूसरे से लड़वाने में लगे हुए हैं।

इस्लाम और मुसलमानों के लिए दुश्मन की असली पॉलीसी जंग की आग भड़काना है। हमारे दुश्मन की एक ख़तरनाक कोशिश यह भी है कि मुसलमानों का एक-दूसरे के हाथों क़त्ल हो और ज़ालिमों को मज़लूमों पर सवार कर दिया जाए। इसी लिए वह ज़ालिमों का साथ देते हैं ताकि मज़लूमों को बुरी तरह कुचल दिया जाए।

मुसलमान होशियार रहें और इस शैतानी पॉलीसी को नाकाम बनाएं। हज हमें इसी काम के लिए तैयार करता है और यही हज में मुश्रिकों और ख़ुदा के दुश्मनों से दूरी के एलान का असली राज़ है।

1-सूरए हज/27-28, 2-सूरए हज/25

अगर रिश्तेदार आपस में मिलते-जुलते रहें तो इसका एक फ़ाएदा यह होगा कि जो लोग अच्छे और अच्छे अख़लाक़ वाले हैं वह अपनी अच्छी बातें और अच्छी चीज़ें दूसरों में ट्रांस्फ़र कर सकते हैं... ।
सिल-ए-रहम समाज को जोड़ने और आपसी मेल-जोल का बहतरीन रास्ता है।
(सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई)

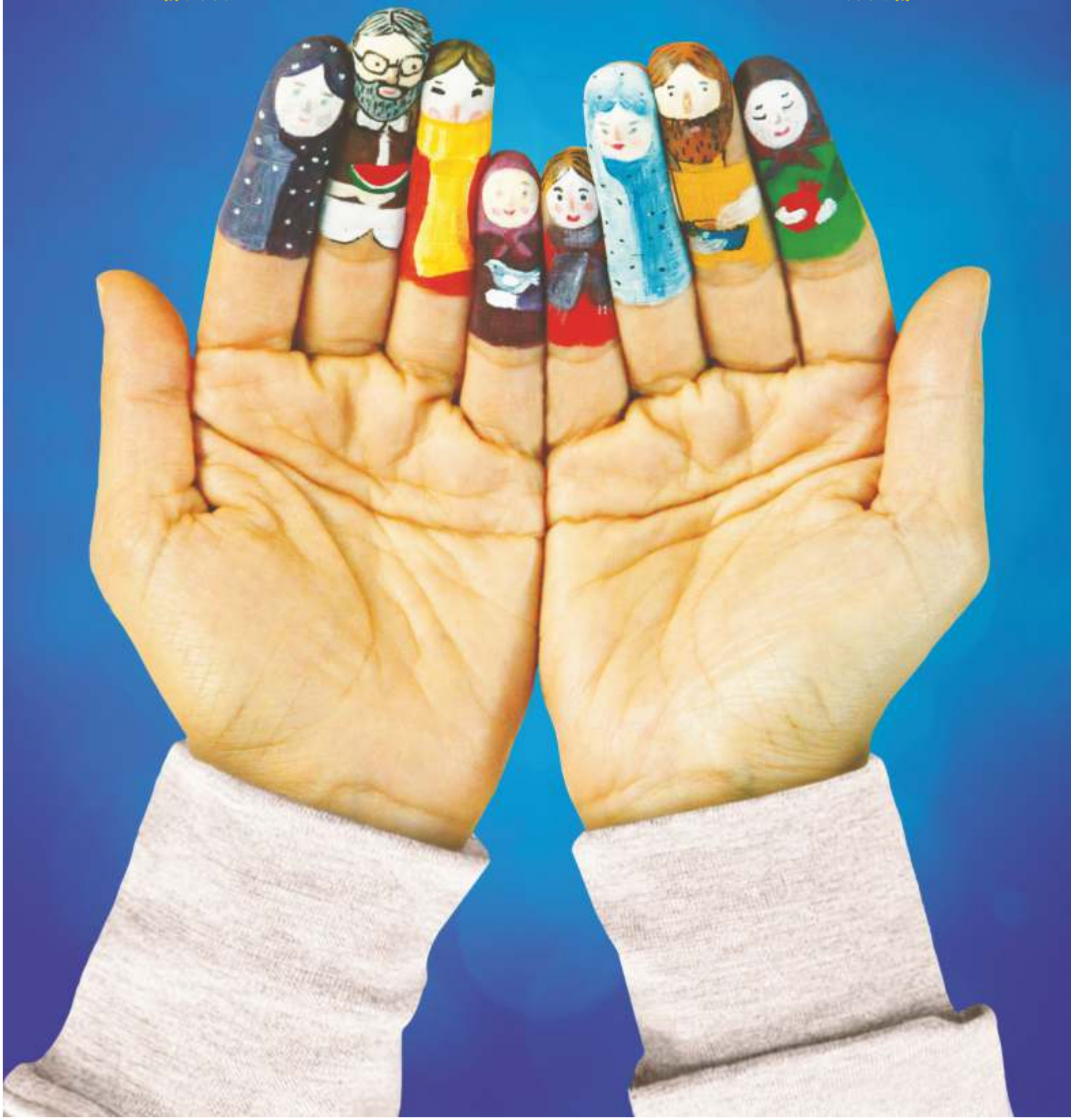

हज़रत अली[अ०] का एक ख़त

हज़रत अली[अ०] ने अपने बड़े बेटे इमाम हसन[अ०] को जो ख़त लिखा है उसमें बच्चों और नौजवानों की परवरिश की ज़रूरत, अहमियत और तरीक़े बताए हैं।

बच्चों की दीनी परवरिश का तरीक़ा क्या है। इसके बारे में इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

क़ुरआन सिखाना

इमाम अली[अ०]: ''अब मैं तुम्हारी परवरिश की शुरुआत ख़ुदा की किताब और उसकी तफ़सीर के ज़रिये कर रहा हूँ।''

क़ुरआन हिदायत और कामयाबी का सबसे बड़ा सिलेबस है और इन्सान की परवरिश के लिए जो नुस्ख़ा भी हो सकता था वह इसमें लिख दिया गया है। इसलिए क़ुरआन का इल्म इन्सान के दिल को उसकी ख़ूराक पहुँचाता है और रूह की प्यास बुझाता है। अगर कोई अपनी नौजवानी और जवानी में क़ुरआन से दिल लगा ले तो उसकी परवरिश के लिए यही काफ़ी है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं: ''जब एक मोमिन जवान (सोच-विचार के साथ) क़ुरआन करीम की तिलावत करता है तो क़ुरआन उसके गोश्त और ख़ून का हिस्सा बन जाता है।''

यहाँ पर क़ुरआन सिखाने का मतलब सिर्फ़ क़ुरआन का पढ़ लेना और ट्रान्सलेशन समझना नहीं है बल्कि क़ुरआन की बेसिक टीचिंग्स और क़ुरआन की हक़ीक़तों का इल्म है जिसके लिए इमाम[अ०] ने ''तावील'' का लफ़्ज़ कहा है। यह इल्म पैग़म्बरों और मासूमीन के पास है इसलिए हमें यह इल्म उन्हीं से लेना चाहिए या फिर क़ुरआन की ज़बान में जिनके पास ''किताब का इल्म'' है उन से क़ुरआन का इल्म हासिल करना चाहिए जिनमें सबसे आगे रसूले अकरम[स०], इमाम अली[अ०] और अहलेबैत[अ०] हैं।

उसूले दीन सिखाना

इमाम अली[अ०]: ''इस्लाम के उसूल और क़ानून तुम्हें समझाता हूँ।''

क़ुरआन की टीचिंग्स में इस्लामी अक़ीदे और शरीअत का पूरा सिस्टम मौजूद है लेकिन उन्हें अलग से पूरे सिस्टम के साथ सीखने और समझने की ज़रूरत है। क़ुरआन सिखाने के बाद इमाम[अ०] ने ''दीनी उसूल'' सिखाने की बात की है यानी दीन के बुनियादी उसूल। इसलिए माँ-बाप के लिए जहाँ बच्चों को क़ुरआन सिखाना ज़रूरी है वहीं इस्लाम के बेसिक अक़ायद सिखाना भी ज़रूरी है क्योंकि अगर ऐसा नहीं होगा तो दूसरे मज़हब वाले उन्हें अपने अक़ीदे और रस्मो रिवाज सिखाना शुरु कर देंगे जो गुमराह करने वाले भी हो सकते हैं।

हलाल व हराम सिखाना

इमाम अली[अ०]: ''उसके अहकाम और हलाल व हराम के बारे में तुम्हें बताता हूँ।''

माँ-बाप की यह भी ज़िम्मेदारी है कि बच्चों के बालिग़ होने से पहले उन्हें शरीअत के अहकाम बता दें और बालिग़ होते ही उन्हें ख़ुदा के हलाल और हराम सिखा दें ताकि वह ज़िन्दगी के हर पीरियड को शरीअत के दायरे में गुज़ारें। हमारे समाज में माँ-बाप इस काम को अपनी ज़िम्मेदारी नहीं समझते बल्कि उलमा की ज़िम्मेदारी समझते हैं जबकि इस काम की सबसे पहली ज़िम्मेदारी माँ-बाप की है। इसलिए माँ-बाप को ख़ुद भी हलाल व हराम का इल्म होना चाहिए ताकि वह बेसिक चीज़ें बच्चों को भी सिखा सकें।

इन चीज़ों की वसिय्यत की वजह

इमाम अली[अ०]: इसके अलावा मैं दूसरी चीज़ों के बारे में कोई बात नहीं करता। फिर मुझे यह डर भी है कि कहीं लोगों के अक़ीदों, नज़रियों और ख़्वाहिशों का फर्क़ तुम्हें इस तरह गुमराह न कर दे जिस तरह बहुत से लोग हो गये हैं। इसलिए इन बातों का पक्का कर देना मेरी नज़र में तुम्हें ऐसे हालात के सामने छोड़ने से ज़्यादा ज़रूरी है कि जिनमें बर्बाद होने का बहुत ज़्यादा ख़तरा है।''

इन चीज़ों की वसिय्यत की एक वजह यह भी

बेहतरीन वसिय्यत जिसे तुम्हें अपने पल्लू में बाँध लेना है वह यह है कि ख़ुदा का तक़्वा अपनाओ।''

है कि क़ुरआन, अक़ायद, शरीअत और हलाल व हराम का इल्म बेसिक इल्म है। अगर उसे छोड़ दिया गया तो इन्सान सब कुछ सीखने के बाद भी जाहिल ही रह जाएगा। दीन इन्सान को ज़िन्दगी की सही समझ देता है, इसलिए सबसे पहले बच्चों को दीन सिखाना चाहिए और उसके उसूल, अक़ायद और अहकाम सिखाना चाहिए। हमारे यहाँ दूसरी सभी चीज़ों को अहमियत दी जाती है लेकिन इस बेसिक चीज़ की तरफ़ ख़ास ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि इसे एक सेकेन्ड्री चीज़ समझा जाता है।

दूसरी वजह यह है कि अगर इन्सान को शुरु से सही दीन नहीं सिखाया जाएगा तो जवानी में जब उसके सामने ''मिलावटी दीन'' पेश किया जाएगा तो वह दीन के नाम पर बताई जाने वाली हर चीज़ को दीन समझ कर उस पर ईमान ले आएगा और अमल भी शुरु कर देगा।

तीसरी वजह शक में डालने वाले वह हमले हैं जिन से बचने के लिए दीन, क़ुरआन और अक़ायद का बेसिक इल्म बहुत ज़रूरी है। वरना जब अलग-अलग तरीक़ों से इन्सान एक ही चीज़ के बारे में तरह-तरह की बातें सुनेगा तो वह समझ ही नहीं पाएगा कि किसकी बात सही है और किसकी ग़लत। असली दीन के मुक़ाबले में जब नक़ली दीन पेश किया जाएगा तो इन्सान कन्फ़्यूज़्ड होकर रह जाएगा।

तक़्वा

इमाम अली[अ]: ''बेटा! याद रखो कि मेरी

तक़्वा इतना अहम है कि इमाम[अ] दूसरी बार अपने बेटे को इसकी वसिय्यत कर रहे हैं क्योंकि यही वह ताक़त है जो इन्सान को ग़लतियों से बचा सकती है।

वाजिब पर अमल करना

इमाम[अ]: ''और उसके वाजिब कामों को काफ़ी जानो।''

इसका मतलब यह भी हो सकता है कि ख़ुदा ने जो चीज़ें वाजिब की हैं उन्हीं को काफ़ी समझो और कभी मुस्तहब कामों के लिए वाजिब कामों को न छोड़ो। इसका दूसरा एक मतलब यह भी हो सकता है कि सिर्फ़ ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ ध्यान रखो, बाक़ी लोग क्या कहते हैं इसकी तरफ़ कान न धरो क्योंकि तुम्हारे लिए अल्लाह और उसका बताया हुआ रास्ता ही काफ़ी है।

अच्छे लोगों के रास्ते पर चलना

इमाम अली[अ]: ''वह सभी तरीक़े जिन पर तुम्हारे बाप-दादा और तुम्हारे ख़ानदान के अच्छे लोग चलते रहे हैं उन्हीं पर चलते रहो क्योंकि उन्होंने अपने बारे में किसी ऐसी सोच को नहीं छोड़ा जो तुम्हारी नज़र में है और न ही किसी बात को अधूरा छोड़ा है। इसी सोच ने उन्हें इस नतीजे तक पहुँचाया है कि अच्छी चीज़ों को अपना लें और बेकार चीज़ों से दूर रहें।''

हो सकता है कि कभी इन्सान को यह समझना मुश्किल हो कि कौन सा रास्ता सही है तो ऐसे में कसौटी, ख़ुदा के अच्छे बन्दे हैं। वही बता सकते हैं कि ख़ुदा का रास्ता कौन सा है जिन में सबसे आगे अहलेबैत[अ] हैं क्योंकि ख़ुद ख़ुदा और उसके रसूल[स] ने क़ुरआन के बाद उन्हीं के दामन को पकड़ने की नसीहत की है।

यहाँ इस बात की तरफ़ ध्यान देने की भी ज़रूरत है कि इमाम[अ] ने सभी पुरखों की पैरवी की बात नहीं की है बल्कि उनके अच्छे कामों की पैरवी की बात की है और उन में से हर एक के रास्ते को अपनाने की इजाज़त नहीं दी है बल्कि उन में से जो लोग अच्छे हैं बस उनके पीछे चलने के लिए कहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि अहलेबैत[अ] के पुरखों में जितने भी लोग थे वह सब बेहतरीन लोग थे। हज़रत हाशिम, हज़रत अब्दुल मुत्तलिब, हज़रत अबू तालिब, हज़रत अब्दुल्लाह, अल्लाह के नबी[स] और यह सभी हस्तियाँ बेहतरीन और तक़्लीद के क़ाबिल हैं।

सोच विचार से काम लेना

इमाम अली[अ]: ''अब अगर तुम्हारा दिल इन चीज़ों को बग़ैर जाने पहचाने क़ुबूल करने के लिए तैयार नहीं है तो फिर यह रिसर्च इल्म और समझ के साथ होना चाहिए और शक में नहीं पड़ना चाहिए और न ही झगड़ों में फंसना चाहिए।''

अगर हमारे प्यारे दिल को अच्छे लोगों का रास्ता समझ में न आए या हमारी रूह उनकी बातों के सामने सरेन्डर न हो तो यूँ ही आँख बन्द करके किसी रास्ते पर नहीं चल पड़ना चाहिए बल्कि इल्म और अक़्ल से काम लेना चाहिए, सोचना-समझना और ग़ौरो-फ़िक्र करना चाहिए। फिर रास्ता चुनना चाहिए क्योंकि अगर ऐसा नहीं होगा तो हम शक की अंधेरी वादी में उतर जाएंगे जहाँ से बचना आसान नहीं है।

ख़ुदा से मदद माँगना

इमाम अली[अ]: ''इन रास्तों पर आगे बढ़ने से पहले अपने ख़ुदा से मदद

माँगो और तौफ़ीक़ के लिए उसकी तरफ़ ध्यान दो।''

जब इन्सान हक़, हक़ीक़त और सही रास्ते की तलाश में निकले तो ख़ुदा से मदद माँगे कि वह ख़ुद उसको रास्ता दिखाए क्योंकि वह जिसकी हिदायत कर दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता। सूरए हम्द में ''इह्-दि-नस-सिरातल मुस्तक़ीम'' का मतलब यही है कि इन्सान हर घड़ी ख़ुदा से हिदायत माँगता रहे क्योंकि उसे हर घड़ी हिदायत की ज़रूरत है।

शक से बचना

इमाम अली[अ०]: ''हर उस अन्दाज़े को छोड़ दो जो किसी शक में डाल दे या किसी गुमराही की तरफ़ ले जाए।''

ज़िन्दगी में ऐसे बहुत से मौक़े आते हैं जिनमें बहुत सी चीज़ों के बारे में इन्सान शक करने लगता है जिन में ज़्यादा उम्मीद इसी बात की होती है कि इन्सान गुमराह हो जाए। इसकी असली वजह इल्म की कमी, मारेफ़त का न होना और बसीरत की कमी होती है। ऐसे मौक़े पर बेहतर है कि इन्सान आगे बढ़ने से बचे। जैसे ख़ुदा के बारे में बहुत से सवाल ऐसे हैं जिनके बारे में इल्म और मारेफ़त के बग़ैर ग़ौरो-फ़िक्र करना इन्सान को गुमराही की तरफ़ ले जा सकता है।

दिल और रूह को तैयार करना

इमाम अली[अ०]: ''फिर अगर तुम्हें इत्मिनान हो जाए कि तुम्हारा दिल साफ़ हो चुका है और ख़ुदा की तरफ़ झुक गया है और तुम्हारी अक़्ल पूरी हो गई है और तुम्हारे पास सिर्फ़ यही एक दर्द रह गया है तो जो बातें मैंने बताई हैं उनमें सोच विचार करना क्योंकि अगर पूरी तरह तुम तैयार न हुए तो याद रखो कि इसी तरह अंधेरे में चलने वाली ऊँटनी की तरह हाथ-पैर मारते रहोगे और अंधेरे में भटकते रहोगे। दीन पर चलने वाला वह नहीं है जो अंधेरों में हाथ-पाँव मारे और बातों को मिला दे। इस से तो ठहर जाना ही बेहतर है।''

इल्म, मारेफ़त और समझदारी उसी वक़्त हासिल हो सकते हैं जब इन्सान का दिल पाक और उसकी रूह पाकीज़ा हो चुकी हो। दिमाग़ पूरी तरह शक की ज़ंजीरों से आज़ाद हो चुका हो क्योंकि जिस दिल में कीना हो, जिस रूह में गुनाहों की गन्दगियाँ हों और जिस फ़िक्र में टेढ़ापन हो उसके लिए हक़ को पहचानना, उसे क़ुबूल करना और उसके साथ चलना नामुमकिन है। अगर इन हालात के साथ कोई हिदायत के लिए कोशिश करता रहे तो अंधेरों और गुमराहियों के अलावा कुछ हाथ नहीं आएगा। फिर इन्सान बेदीनी को भी दीन का लिबास पहना देगा और बातिल पर भी हक़ की चादर चढ़ा कर उसके पीछे चलता रहेगा।

دوماہی مؤمل لکھنؤ

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

آج ہی ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

हज़रत नजमा ख़ातून

इमाम मूसा काज़िम[अ०] की बीवी और इमाम अली रज़ा[अ०] की माँ का नाम नजमा था।

आप एक कनीज़ थीं जिन्हें इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की माँ जनाबे हमीदा ने ख़रीद कर इमाम मूसा काज़िम[अ०] को पेश कर दिया था। हज़रत नजमा अरब नहीं थीं लेकिन पैदा अरब में हुई थीं। आप अफ़्रीक़ा या साउथ फ़्रांस के एक आयलेंड की थीं।

एक हदीस में है कि आपको इमाम मूसा काज़िम[अ०] के हुक्म पर ख़रीदा गया था। हिशाम इब्ने अहमद का इस बारे में यह कहना है:

एक बार इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने मुझ से पूछा, ''क्या पश्चिमी दुनिया की तरफ़ से कोई आदमी ग़ुलाम और कनीज़ें ख़रीद कर लाया है?''

मैंने कहा, ''मुझे इस बारे में पता नहीं है।''

इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''मेरे साथ चलो! चल कर देखते हैं।'' जब हम दोनों ग़ुलामों को बेचे जाने वाले बाज़ार में पहुँचे तो पता चला कि पश्चिमी दुनिया से एक आदमी ग़ुलाम और कनीज़ें ख़रीद कर लाया है।

इमाम[अ०] ने उस से कनीज़ें दिखाने के लिए कहा। उसने कई कनीज़ें दिखाईं लेकिन इमाम[अ०] ने उन में से किसी को नहीं ख़रीदा।

इमाम[अ०] ने कहा, ''और दिखाओ।''

उसने कहा, ''इनके अलावा सिर्फ़ एक बीमार कनीज़ है, उसे नहीं बेच सकता।''

जब उसने बेचने से इनकार कर दिया तो इमाम[अ०] घर चले आए।

अगले दिन इमाम[अ०] ने मुझे बुलाकर कहा, ''उस आदमी के पास आओ और उस से पूछो कि उस कनीज़ को कितने में बेचेगा। जितनी रक़म माँगे दे देना और कनीज़ को ले आना।''

मैं इमाम[अ०] के कहने पर वापस उस आदमी के पास गया। उस से बात की और कनीज़ को ख़रीद कर इमाम[अ०] के पास ले आया।

इमाम[अ०] ने वह कनीज़ अपनी माँ की ख़िदमत के लिए उन्हें सौंप दी।

आपका नाम

हज़रत नजमा का सबसे मशहूर नाम नजमा ही है लेकिन आपको नोबिया, उरवा, समाना, नकतम और ख़ीज़रान भी कहा गया है। आपका एक लक़ब (टाइटल) उम्मुल बनीन भी है।

शैख़ सदूक़ लिखते हैं: जब जनाबे नजमा ख़ातून के यहाँ इमाम रज़ा[अ०] पैदा हुए तो उन्हें ''ताहिरा'' का लक़ब दिया गया था।

इल्म और अख़्लाक़

हज़रत नजमा ने इमाम सादिक़[अ०] के घर में आने के बाद अपने अख़्लाक़ व किरदार से वहाँ सभी लोगों के दिल जीत लिये थे।

अली इब्ने मीसम ने इस बारे में लिखा है: ''हज़रत नजमा बहुत अक़्लमन्द और समझदार थीं। उनका अख़्लाक़ बहुत अच्छा था और वह हज़रत हमीदा की बहुत ख़िदमत किया करती थीं।''

आपके बारे में लिखा गया है कि आपने इमाम मूसा काज़िम[अ०] की माँ यानी हज़रत हमीदा से इस्लाम के बारे में काफ़ी कुछ सीख-समझ लिया था और उसके बाद दीन के एक-एक हुक्म की पाबन्दी करने लगी थीं।

शादी

हज़रत हमीदा अपने बेटे मूसा काज़िम[अ०] की शादी करना चाहती थीं और उसके लिए उन्हें एक पाकीज़ा और अच्छी लड़की की तलाश थी। उधर हज़रत नजमा को इमाम सादिक़[अ०] के घर में रहते हुए अच्छा ख़ासा वक़्त हो चुका था। उनका अख़्लाक़ पहले ही घर में सब लोगों पर अपनी छाप छोड़ चुका था। इसलिए हज़रत हमीदा उन्हें भी अपनी बहू के रूप में देख रही थीं मगर दिल की तसल्ली के लिए ख़ुदा की तरफ़ से किसी इशारे का इन्तेज़ार कर रही थीं बल्कि इसके लिए दुआ भी किया करती थीं। एक दिन आपको वह इशारा मिल ही गया।

इमाम मूसा काज़िम[अ०] की माँ ने ख़्वाब में अल्लाह के रसूल[स०] को देखा। उन्होंने आपको हुक्म दिया कि अपने बेटे मूसा[अ०] की शादी नजमा से कर दो। साथ ही ख़्वाब में उन्हें यह ख़ुशख़बरी भी दी कि नजमा से एक मुबारक बेटा भी पैदा होगा।

हज़रत हमीदा ने अपना ख़्वाब अपने बेटे को बताया तो इमाम काज़िम[अ०] ने भी ख़ुश होकर अपना ख़्वाब सुनाते हुए कहा, ''मैंने भी ख़्वाब में रसूले ख़ुदा[स०] और बाबा को देखा है। कह रहे थे: ऐ मूसा इस कनीज़ से तुम्हारे यहाँ एक बेटा होगा जो तुम्हारे बाद इस दुनिया में सबसे अज़ीम इन्सान होगा।''

हज़रत हमीदा ने अल्लाह के रसूल[स०] के हुक्म पर चलते हुए हज़रत नजमा की शादी इमाम मूसा काज़िम[अ०] से कर दी।

फ़ज़ीलत

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की बीवी हज़रत हमीदा अपने बेटे इमाम काज़िम[अ०] से कहती हैं, ''मैंने इस से ज़्यादा अच्छी कोई कनीज़ आज तक नहीं देखी है और जल्दी ख़ुदा इसके ज़रिये हमारी नस्ल को आगे बढ़ाएगा।''

इबादत

इमाम रज़ा[अ०] फ़रमाते हैं: जब मैं अपनी माँ के पेट में था तो उन्हें भारी पन महसूस नहीं होता था। सोते वक़्त भी उन्हें ख़ुदा की हम्द और तस्बीह की आवाज़ें सुनाई देती थीं। वह बहुत फ़ज़ीलतों वाली औरत थीं। इबादत और ख़ुदा का ज़िक्र बहुत ज़्यादा किया करती थीं।

अक़ाएद

ख़ुदा की सिफ़तें

■ आयतुल्लाह जाफ़र सुब्हानी

अल्लाह एक ऐसी हस्ती है जिसकी कोई हद नहीं है। इसीलिए उस जैसा दूसरा कोई नहीं हो सकता। इन्सान और दूसरी हर चीज़ की कोई न कोई हद ज़रूर होती है। इसीलिए हम अल्लाह की ज़ात को नहीं समझ सकते क्योंकि उसकी कोई हद नहीं है लेकिन इतना ज़रूर है कि उसे उसकी सिफ़तों के ज़रिये पहचाना जा सकता है।

अल्लाह की सिफ़तें दो तरह की हैं:

(1) वह सिफ़तें जिन्हें ख़ुदा की ज़ात से जोड़ा जा सकता है और कहा जा सकता है कि ख़ुदा ऐसा है। इन्हें दीनी लेंग्वेज में ''सुबूतिया सिफ़तें'' कहा जाता है जैसे हम कहते हैं: ख़ुदा ज़िन्दा है, ख़ुदा ताक़त वाला है, ख़ुदा आलिम है, ख़ुदा के पास हर चीज़ का इख़्तियार और कन्ट्रोल है या ख़ुदा हमेशा से है।

(2) वह सिफ़तें जिन्हें ख़ुदा की ज़ात से नहीं जोड़ा जा सकता और कहा जा सकता है कि ख़ुदा ऐसा नहीं है। इन्हें दीनी लेंग्वेज में ''सल्बिया सिफ़तें'' कहा जाता है जैसे हम कहते हैं: ख़ुदा का जिस्म नहीं है, ख़ुदा किसी ख़ास जगह में नहीं है, ख़ुदा किसी चीज़ से मिल कर नहीं बना है या ख़ुदा किसी का मोहताज नहीं है।

अल्लाह की सिफ़तों को कैसे जानें ?

ख़ुदा की सिफ़तों को समझने के दो रास्ते हैं:

(1) अक़्ल (2)

(2) वही यानी क़ुरआन और हदीस

अक़्ल के ज़रिये ख़ुदा की सिफ़तों को समझने का मतलब यह है कि इन्सान ख़ुदा की पैदा की हुई चीज़ों में, इस दुनिया में, इस दुनिया में बिखरी हुई ख़ुदा की निशानियों पर ध्यान दे और सोच-विचार करे। इस रास्ते से इन्सान समझ सकता है कि ख़ुदा कैसा है और उसकी क्या-क्या सिफ़तें हैं जैसे अगर हम उस सिस्टम पर ध्यान दें जिस पर यह दुनिया के सिस्टम बनाई गई है तो क्या हम इस रिज़ल्ट तक नहीं पहुँचेगे कि यह दुनिया जिसने बनाई है उसके पास इतना इल्म, इतनी ताक़त और इतना इख़्तियार है कि जिसकी कोई हद नहीं है है ?

क़ुरआन मजीद इन्सान को इसी लिए इस दुनिया पर ध्यान देने और सोच-विचार करने का हुक्म देता है और कहता है:

''उन से कह दीजिए कि आसमानों और ज़मीन में बिखरी हुई हमारी निशानियों पर सोच-विचार करें और ध्यान दें।''[1]

इन्सान जब इस दुनिया और इस दुनिया में बिखरी हुई ख़ुदा की निशानियों में ध्यान देता है तो उसकी अक़्ल हैरान रह जाती है और वह सोचने लगता है कि उसका बनाने वाला कैसा होगा। फिर उसकी अक़्ल इस रिज़ल्ट पर पहुँचती है कि उसके पास ज़रूर सारा इल्म, सारी ताक़त और सारा इख़्तियार व कंट्रोल होगा।

जो लोग ख़ुदा की भेजी हुई किताबों, उसके नबियों और इस बात पर यकीन रखते हैं कि ख़ुदा अपने नबियों को इल्म देकर भेजता है और सब कुछ बताता है तो वह जब इन आसमानी किताबों को पढ़ते हैं या इन नबियों व इमामों की बातों को पढ़ते हैं तो वह जान लेते हैं कि ख़ुदा की क्या-क्या सिफ़तें हैं और ख़ुदा कैसा है ?

जब हम क़ुरआन पढ़ते हैं तो हमें उसमें ख़ुदा के 135 नाम और सिफ़तें दिखाई देती हैं जिनके ज़रिये हम ख़ुदा को समझ सकते हैं जैसे क़ुरआन मजीद फ़रमाता है:

''ख़ुदा वही है जिसके अलावा किसी की भी इबादत नहीं की जा सकती। वही मालिक है, वह हर ऐब से पाक है, सबके लिए अमन लाने वाला है, अमान देने वाला है, देखरेख करने वाला है, सबसे ऊपर है, बड़ी ताक़त वाला है, बड़ाई का हक़ रखने वाला है और उसके बारे में जो भी शिर्क किया जाता है वह उस से पाक है। वही ख़ुदा पैदा करने वाला, सबको बनाने वाला, शक्लें बनाने वाला है, उसके बेहतरीन नाम हैं और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है वह सब उसकी तस्बीह करते हैं, वह सबसे ऊपर और हिकमत वाला है।''[2]

ख़ुदा की सिफ़तों को एक दूसरे एंग्ल से दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है:

(1) कुछ वह सिफ़तें जिनका ताल्लुक़ ख़ुदा की ज़ात से है जैसे ख़ुदा का इल्म, उसकी ताक़त या उसका ज़िन्दा होना।

(2) कुछ वह सिफ़तें हैं जिनका ताल्लुक़ ख़ुदा के कामों से है जैसे ख़ुदा पैदा करने वाला है, रिज़्क़ देने वाला है, दुनिया को चलाने वाला है या नेमतें देने वाला है।

अब ख़ुदा की कुछ सिफ़तों पर एक नज़र डालते हैं:

1- ख़ुदा का इल्म

ख़ुदा का इल्म उसकी हस्ती से जुड़ा हुआ है यानी जब हम ''अल्लाह'' कहते हैं तो उसमें उसका इल्म भी शामिल होता है। ख़ुदा का इल्म हमेशा ख़ुदा की हस्ती के साथ-साथ है बल्कि अल्लाह ही इल्म का असली सोर्स है। उसका इल्म हमेशा से था और हमेशा रहेगा। वह हर चीज़ का जानकार है, हर चीज़ का पूरा-पूरा इल्म रखता है और कोई भी चीज़ उसके इल्म से बाहर नहीं है जैसा कि क़ुरआन फ़रमाता है:

''ख़ुदा हर चीज़ के बारे में जानने वाला है।''[3]

या

''जान लो कि जिसने पैदा किया है वह सब कुछ जानता है और हर चीज़ की ख़बर रखने वाला है।''[4]

हदीसों में भी ख़ुदा के इल्म के बारे में हमें काफ़ी कुछ समझाया गया है जैसे इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं: ''ख़ुदा इस दुनिया को पैदा करने से पहले भी इसके बारे में सब कुछ जानता था और इसके पैदा करने के बाद भी जानता है। उसका इल्म हर चीज़ के बारे में ऐसा ही है।''[5]

2- ख़ुदा की ताक़त

ख़ुदा की ताक़त भी उसके इल्म की तरह ही है। वह सब कुछ कर सकता है, उसकी ताक़त की कोई हद नहीं है, उसकी ताक़त उसमें हमेशा से थी और हमेशा रहेगी। क़ुरआन फ़रमाता है:

''ख़ुदा हर चीज़ की ताक़त रखता है।''[6]

या:

''ख़ुदा की ताक़त हर चीज़ पर है।''[7]

इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, ''दुनिया की हर चीज़ के बारे में ख़ुदा का इल्म, उसकी ताक़त और उसकी हुकूमत एक जैसी है।''[8]

जब ख़ुदा की ताक़त की बात आती है तो कुछ लोग बड़े अजीब-अजीब से सवाल करते हैं। यह भी नहीं सोचते कि यह सवाल सही हैं भी या नहीं। जैसे क्या ख़ुदा अपने जैसा कोई ख़ुदा बना सकता है? क्या ख़ुदा ऐसा पहाड़ बना सकता है जिसे वह ख़ुद भी न उठा सके? क्या ख़ुदा सूई के सूराख़ से एक ऊँट को निकाल सकता है?

इन सवालों का ख़ुदा की क़ुदरत से कोई लेना-देना नहीं है कि इन सवालों का हाँ या ना में जवाब दिया जाए। इन सवालों से पहले यह सोचने की ज़रूरत है कि क्या यह काम हो भी सकते हैं या नहीं? ख़ुदा हर वह काम कर सकता है जो हो सकता हो। इसी तरह जो मुमकिन ही नहीं है वह हो ही नहीं सकता और कोई भी नहीं कर सकता।

हज़रत अली[अ०] से किसी ने इसी तरह का एक सवाल किया था तो आपने उसे जवाब यह दिया था: ''मामला यह नहीं है कि ख़ुदा यह काम नहीं कर सकता बल्कि बात यह है कि यह काम हो ही नहीं सकता।''[9]

3- ख़ुदा का ज़िन्दा होना

ख़ुदा हमेशा से ज़िन्दा था और हमेशा ज़िन्दा रहेगा। ख़ुदा के के बारे में यह नहीं सोचा जा सकता कि वह कब से है और न यह सोचा जा सकता है कि वह कब तक रहेगा।

ख़ुद वक़्त का पैदा करने वाला भी ख़ुदा ही है इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि वह कब से है, बस इतना कह सकते हैं कि वह हमेशा है।

उसके लिए मौत भी नहीं है। इसलिए उसके कब तक होने के सवाल ही नहीं उठता।

क़ुरआन फ़रमाता है:

''उस ज़िन्दा पर भरोसा करो जिसके लिए मौत नहीं है।''[10]

4- ख़ुदा का इरादा

ख़ुदा का इरादा उसके इख़्तियार (कंट्रोल) से जुड़ा हुआ है। यानी ख़ुदा जो इरादा भी करता है वह उसमें पूरी तरह से आज़ाद होता है। वह अपना हर काम अपनी मर्ज़ी और इख़्तियार के साथ अपने इरादे से करता है। कोई उसे किसी काम या किसी इरादे के लिए मजबूर नहीं कर सकता।

दूसरी बात यह है कि उसके इरादे और इन्सान के इरादे में फ़र्क़ है। इन्सान पहले इरादा करता है, फिर उस पर अमल करता है लेकिन ख़ुदा का इरादा ही उसका अमल है। यानी वह जिस चीज़ और जिस काम का इरादा करता है वह हो जाता है। जैसा कि क़ुरआन फ़रमाता है:

''यह ख़ुदा की हुकूमत और उसकी ताक़त का एक जलवा है कि वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा और वह हो जाती है।''[11]

1-सूरए यूनुस/101
2-सूरए हश्र/23-24
3-सूरए अनकबूत/62
4-सूरए मुल्क/14
5-तौहीद, शैख़ सदूक़/137
6-सूरए अहज़ाब/27
7-सूरए कहफ़/45
8-तौहीद, शैख़ सदूक़/133
9-तौहीद, शैख़ सदूक़/13
10-सूरए फ़ुरक़ान/58
11-सूरए यासीन/82

■ नजीबुल हसन ज़ैदी

अच्छा इन्सान

इमाम बाक़िर[अ०] की नज़र में

आज दुनिया में हर दिन बदलती वैल्यूज़ के साथ इन्सान की नेकी और अच्छाईयों के बारे में सोच भी बदलती जा रही है। नेक और अच्छे लोगों को परखने की कसौटी भी बदल रही है। हर एक अपने आप को बहुत बड़ा नेक और बहुत अच्छा इन्सान दिखाने की कोशिश करता दिखाई पड़ता है जिसके लिए सुबूत के तौर पर वह अपनी नेकियाँ व अच्छाईयाँ भी गिनाना शुरु कर देता है। आज के ज़माने में जिन कामों को अच्छा समझा जा रहा है उसके कुछ नमूने यह हैं: जैसे किसी स्कूल में डोनेशन दे देना, किसी बच्चे की फ़ीस अपने ज़िम्मे ले लेना, किसी यतीम को पाल-पोस लेना, कोई अस्पताल बनवा देना वग़ैरा।

इस बात में कोई शक नहीं है कि यह सब अच्छे काम हैं और यह सारे काम करने वाले इन्सान को नेक या अच्छे काम करने वाला इन्सान ही कहा जाएगा लेकिन यह सारी चीज़ें उसकी अच्छाईयों और नेकी की कसौटी नहीं हैं।

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने हमें साफ़-साफ़ बता दिया है कि अच्छा इन्सान कौन है और अच्छे काम किन कामों को कहा जाता है।

आइए! पहले एक सवाल पर नज़र डालते हैं और उसके बाद आगे बढ़ते हैं।

सवाल यह है कि दुनिया वाले जिन कामों को अच्छा समझते हैं उन कामों को करने वाले के दिल में उन लोगों से मोहब्बत पाई जाती है जो सच में अल्लाह के अच्छे बन्दे हैं या क्या ऐसा है कि वह बुरे लोगों के बीच में रहता है और अल्लाह के अच्छे बन्दों से हमेशा उसकी अनबन रहती है यानी यूँ तो वह दुनिया के इन अच्छे कामों में बहुत बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता है मगर अल्लाह के अच्छे बन्दों से उसकी सलाम-दुआ भी नहीं होती।

क्या ऐसे इन्सान को अच्छा इन्सान कहा जा सकता है?

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] एक हदीस में इस बारे में यूँ फ़रमाते हैं:

''अगर तुम यह जानना चाहते हो कि तुम्हारे अन्दर कोई अच्छाई पाई जा रही है या नहीं तो अपने दिल के अन्दर झांक कर देखो। अगर यह दिल अल्लाह की इताअत करने वाले अच्छे बन्दों की तरफ़ झुका हुआ हो और दिल में उन लोगों की मोहब्बत पाई जाती हो जो ख़ुदा के अच्छे बन्दे हैं और साथ ही इस दिल में उन लोगों से नफ़रत भी हो जो अल्लाह की बात नहीं मानने वाले हैं तो इसका मतलब है कि तुम्हारे अन्दर अच्छाई व नेकी का जज़्बा पाया जाता है और अल्लाह भी तुम्हें पसन्द करता है लेकिन अगर तुम अल्लाह की इताअत करने वाले बन्दों से नफ़रत करते हो और गुनाह करने वालों से मोहब्बतत करते हो तो जान लो कि तुम्हारे अन्दर कोई अच्छाई नहीं पाई जाती, अल्लाह भी तुम्हें पसन्द नहीं करता। दूसरी बात यह कि इन्सान उसी के साथ माना जाता है जिस से वह मोहब्बत करता है।''

यह हदीस हमें बता रही है कि अगर हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे अन्दर कितनी अच्छाई पाई जाती है तो हमें अपने दिल को टटोलना होगा कि हमारा दिल किन लोगों की तरफ़ झुका हुआ है। अगर इस दिल में दुनिया की मोहब्बत पाई जाती है, उन लोगों की मोहब्बत पाई जाती है, जिन्हें ख़ुदा से कोई मतलब नहीं है, जिन्हें अल्लाह के दीन से कोई मतलब नहीं है, सिर्फ़ अपने आप से मतलब है तो इसका मतलब यह है कि हमारे अन्दर वह सोर्स ही नहीं है जिस से अच्छाईयाँ व नेकियाँ फूट कर बाहर निकलती हैं।

इसके उलट अगर हमारा दिल ख़ुदा की इताअत करने वालों और उसके अच्छे बन्दों की तरफ़ झुका हुआ है तो इसका मतलब यह है कि हमारे अन्दर नेकी पाई जाती है। अब ज़रूरी है कि हम भी अपनी ज़िन्दगी को वैसा ही बनाएं जैसी अल्लाह के नेक बन्दों ने अपनी

ज़िन्दगियाँ बनाई हैं।

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] की यह हदीस हमें एक कसौटी दे रही है और हमारे सामने एक फ़ार्मूला रख रही है जिसमें हम ख़ुद को तौल सकते हैं कि हमारा झुकाव किस तरफ़ है।

दुनिया में आज बहुत से लोग हैं, जो इस बात का दावा करते हैं कि वह अच्छे हैं, नेक हैं, लेकिन इस बात का पता कैसे चले कि हम नेकी च अच्छाई पर हैं ?

हमारे दिल में अच्छाई है, क्या इसका सुबूत हमारे वह अच्छे काम हैं जो हम ने किये हैं जैसे कि अकसर हम अच्छा होने के सुबूत के तौर पर अपने अच्छे काम गिनाया करते हैं कि हम ने यह किया है और वह किया है।

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] ने इस हदीस में जो फ़ार्मूला बताया है उस से अच्छे इन्सान की पहचान सामने आती है और वह यह है कि अपने नेक या अच्छे कामों पर मत जाओ बल्कि यह देखो कि तुम्हारे दिल का झुकाव किस तरफ़ है, तुम्हारा उठना-बैठना किन लोगों के साथ है, क्या तुम उन मालदारों के साथ रहना पसन्द करते हो जो दुनिया में डूबे हुए हैं या दो मिनट उस ग़रीब के साथ भी बैठना पसन्द करते हो जिसके पास ख़ुदा की इताअत के अलावा कुछ नहीं है।

अब हम इस हदीस को सामने रखकर अपना हिसाब आसानी से कर सकते हैं कि हमारे अन्दर नेकी पाई जाती है या हम बुराई की तरफ़ झुकाव रखते हैं। अगर हम अच्छे और नेक लोगों का साथ नहीं दे सकते, उनके लिए खड़े नहीं हो सकते और बस अपनी नेकियों की फ़िक्र है तो हो सकता है कि हमारी यह नकियाँ हमारे काम न आ सकें।

जैसा कि एक और हदीस में इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं:

''एक बार ख़ुदा ने जनाबे शुऐब[अ०] पर वही की कि मैं तुम्हारी क़ौम के एक लाख लोगों पर अपना अज़ाब नाज़िल करूँगा और उन्हें जान से मार दूँगा, उन में से साठ हज़ार वह होंगे जो बुरे लोग होंगे और चालीस हज़ार वह होंगे जो अच्छे और नेक होंगे।

जनाबे शुऐब[अ०] ने कहाः ऐ ख़ुदा! बुरे लोगों पर तो अज़ाब होना चाहिए लेकिन अच्छे लोगों पर अज़ाब की वजह क्या है, उन पर क्यों अज़ाब होगा ?

ख़ुदा ने जनाबे शुऐब[अ०] से कहा कि ऐसा इसलिए है कि यह लोग गुनाह करने वालों से अलग होकर तो रहते थे मगर उनके सामने यह नहीं जताते थे कि यह उनके

बुरे कामों से नाराज़ हैं।''

इस हदीस से साफ़ पता चलता है कि एक अच्छा इन्सान बनने के लिए जितना ज़रूरी यह है कि हम अच्छे काम करें, उतना ही ज़रूरी यह भी है कि अच्छे लोगों का साथ दें और बुरे लोगों की बुराईयों पर अपनी नाराज़गी जताएं। साथ ही बुराईयों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ भी उठाएं।

अगर इस फ़ार्मूले पर दुनिया चल रही होती तो आज हर तरफ़ बुराईयाँ न फैली होतीं, ज़ालिमों को ज़ुल्म का मौक़ा न मिलता, किसी एक मुल्क को चारों तरफ़ से घेर कर अकेला न किया जाता, शैख़ ज़कज़ाकी जैसे मुजाहिद पर ज़ुल्म न होता, हमारे ही मुल्क में हमारी यह हालत न होती। यह सब कुछ इसलिए हुआ है और हो रहा है क्योंकि हम अपनी नेकी तो करते रहे, लेकिन उन बुरे लोगों के ख़िलाफ़ खड़े नहीं हुए जिन्होंने समाज में बुराईयाँ फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। हम दिखने में तो अच्छे कामों में लगे रहे लेकिन हम ने उन नेक और अच्छे लोगों का साथ नहीं दिया जिन पर दुनिया में ज़ुल्म किया गया।

अगर हम अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करें और जिस इमाम का ग़म मना रहे हैं, उनकी बताई हुई बातों को भी अपनी रूह में उतार लें, अच्छे काम के साथ अच्छे लोगों से मोहब्बत भी करें और बुरों से नफ़रत भी करें तो हम इतने ऊँचे मुक़ाम पर पहुँच जाएंगे कि सोच भी नहीं सकते।

यही एक वह सिचुएशन है जिममें हम सही मायनी में अपने इमाम[अ०] की विलायत पर डटे रहने वालों में गिने जा सकेंगे। ग़ैबत के ज़माने में अगर कोई अहलेबैत[अ०] की विलायत पर डटा रहे तो मासूम इमाम[अ०] ही की हदीस है कि उसका अज्र बद्र और हुनैन के हज़ार शहीदों के बराबर होगा।

● ● ●

7 ज़िल हिज्जा

शहादत

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०]

क़ुरबानी की याद में

क़ुरआन में ख़ुदा ने हज़रत आदम[अ०] के बेटों के बारे में जहाँ बात की है वहाँ क़ुर्बानी की तरफ़ इशारा भी किया है और इन आयतों में हमें बहुत-बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

क़ुरआन फ़रमाता हैः

''पैग़म्बर! आप उनको आदम[अ०] के दोनों बेटों का सच्चा वाक़िआ सुनाईये कि जब दोनों ने क़ुर्बानी दी और एक की क़ुर्बानी क़ुबूल हो गई और दूसरे की नहीं हुई तो उसने कहा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा। दूसरे ने जवाब दिया कि मेरी ग़ल्ती क्या है, ख़ुदा सिर्फ़ तक़वा रखने वालों के आमाल को क़ुबूल करता है।''

''हाबील की क़ुर्बानी क़ुबूल हो गई और क़ाबील की क़ुर्बानी क़ुबूल नहीं हुई।''[1]

इस आयत में कहा गया है कि हज़रत आदम[अ०] के बेटों ने ख़ुदा से क़रीब होने के लिए उसकी बारगाह में क़ुर्बानी पेश की थी।

हज़रत आदम[अ०] के बेटों यानी हाबील और क़ाबील का यह वाक़िआ कोई कहानी- क़िस्सा नहीं है बल्कि यह एक सच्चाई है और ऐसा ही हुआ था।

इस आयत में इन दोनों भाईयों का नाम नहीं आया है लेकिन हिस्ट्री से पता चलता है कि जिसकी क़ुर्बानी क़ुबूल हुई थी वह हाबील थे और जिसकी क़ुर्बानी क़ुबूल नहीं हुई वह क़ाबील था।

क़ाबील की क़ुर्बानी इसलिए क़ुबूल नहीं हुई थी क्योंकि क़ाबील के अन्दर तक़वा नहीं था, जबकि हाबील की क़ुर्बानी इसलिए क़ुबूल हुई थी क्योंकि उनके पास तक़वा था।

क़ुर्बानी हज़रत आदम[अ०] के बेटों से शुरु हुई लेकिन उन पर ख़त्म नहीं हुई क्योंकि क़ुरआन करीम की आयतों से पता चलता है कि इसके बाद से हर उम्मत में क़ुर्बानी करना शरीअत का एक क़ानून और ख़ास अमल गिना जाता है। हर दीन के मानने वाले क़ुर्बानी किया करते थे जिसके बारे में क़ुरआन ने सूरए हज की 34वीं आयत में बात की हैः

''हम ने हर क़ौम के लिए क़ुर्बानी का तरीक़ा बता दिया है ताकि जिन जानवरों का रिज़्क़ हम ने दिया है उन पर ख़ुदा का नाम पढ़ें।''[2]

इस आयत से समझ में आता है कि जानवरों की क़ुर्बानी पिछले वालों में भी आम बात थी और हज में भी क़ुर्बानी की एक बड़ी शर्त होती थी।

सबसे बड़ी क़ुर्बानी जिसकी याद में हम आज भी ईदे क़ुर्बान (बक़ाईद) में क़ुर्बानी करते हैं, वह हज़रत इब्राहीम[अ०] और हज़रत इस्माईल[अ०] की क़ुर्बानी है जिसके बारे में क़ुरआन फ़रमाता हैः

''फिर जब वह बेटा उनके साथ दौड़ने-भागने लायक़ हो गया तो उन्होंने कहा कि बेटा! मैं ख़्वाब में देख रहा हूँ कि मैं तुम्हारे गले पर छुरी फेर रहा हूँ! अब तुम बताओ कि इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है। बेटे ने जवाब दिया कि बाबा! जो आपको हुक्म दिया जा रहा है उसे पूरा कीजिए। इन्शाअल्लाह! आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे। फिर जब दोनों ने ख़ुदा के हुक्म के सामने सर झुका दिया और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया तो हम ने आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! तुम ने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया। हम इसी तरह नेक अमल करने वालों को इनाम देते हैं। बेशक यह बड़ा खुला हुआ इम्तेहान है और हम ने इसका बदला एक बड़ी

क़ुर्बानी को बना दिया है।''[3]

क़ुर्बानी और नमाज़ का दिन

ईदुल अज़्हा या ईदे क़ुर्बान वह ईद है जो मारेफ़त रखने वाले लोगों को इब्राहीमी क़ुर्बानी की याद दिलाती है। वह क़ुर्बानी जिस से इन्सानों और ख़ुदा के प्यारों को अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान होने का जज़्बा मिलता है।

इसी लिए इसे ख़ास तौर पर ख़ुदा की याद और नमाज़ का दिन कहा गया है। क़ुरआन फ़रमाता हैः ''बेशक! वह कामयाबी पा गया जिसने ख़ुद को अन्दर से पाक कर लिया और अपने रब को याद किया। फिर नमाज़ पढ़ी।''[4]

हदीसों में है कि यहाँ नमाज़ का मतलब ईदे क़ुर्बान और ईदे फ़ित्र की नमाज़ है।[5]

मग़फ़िरत का दिन

अल्लाह के रसूल[स॰] ने इस बारे में फ़रमाया हैः ''फ़रिश्ते ईद के दिन चुप रहने वाले इन्सानों के होंटों तक आ जाते हैं और लोगों के रास्ते में खड़े होकर कहते हैंः सुबह सवेरे ख़ुदा की बारगाह में हाज़िर हो जाओ क्योंकि वह बहुत ज़्यादा जज़ा देने और माफ़ करने वाला है।''

मुबारक दिन

इमाम सज्जाद[अ॰] सहीफ़-ए-सज्जादिया में फ़रमाते हैंः ''ऐ ख़ुदा! यह दिन कितनी बरकत वाला और मुबारक है। इस दिन मुसलमान तेरी ज़मीन पर जगह-जगह इकटठा हैं और उनकी हालत यह है कि कोई तुझ से माँग रहा है, तो कोई अपनी हाजत पूरी करवाने के लिए तुझ से उम्मीद लगाए बैठा है, किसी को तेरी अज़्मत का डर है और तू इन सब लोगों को देख रहा है। इसलिए मैं तुझ से तेरे करम का वास्ता देकर चाहता हूँ और सवाल करता हूँ कि मोहम्मद व आले मोहम्मद पर दुरूद भेज।''

इमाम सज्जाद[अ॰] की इस दुआ से यह भी समझ में आता है कि यह दिन मोहम्मद व आले मोहम्मद पर सलवात भेजने का ख़ास दिन है।

1-सूरए माएदा/27, 2-सूरए हज/34, 3-सूरए साफ़्फ़ात/102-107, 4-सूरए अअ्ला/14-15, 5-बिहार, 87/348

سہ ماہی مصباح الہدیٰ

★ تعمیری افکار ★ مدلل گفتگو
★ تحقیقی انداز ★ شگفتہ بیان
فرمودات قرآن اور تعلیمات اہل بیتؑ
پر مشتمل مضامین پڑھنے کے لئے
مصباح الہدیٰ اردو کے ممبر بنئے۔

سہ ماہی مصباح الہدیٰ (اردو) کے ممبر بنئے

قیمت فی شمارہ: ۶۰/روپیہ | سالانہ: ۲۰۰/روپیہ | رجسٹرڈ ڈاک سے: ۳۰۰/روپیہ

दोमाही
मिस्बाहुल हुदा

जवानों के लिए
हुदा मिशन की
हिन्दी ज़बान में
ख़ास पेशकश

दोमाही ''मिस्बाहुल हुदा'' (हिन्दी)
आज ही मेम्बर बनिये और साथियों को भी बनाईये।

प्रति मैगज़ीनः 40/रुपये | सालानाः200/रुपये | रजिस्टर्ड डाक सेः 300/रुपये

Huda Mission
Office : Shafaat Market, Zehra Colony, Muftiganj, Lucknow
Mob: +91-9415090034, 9451085885
9389830801, 9936193817

इमाम मोहम्मद तक़ी अ0 की 5 नसीहतें

(1)

मोमिन के अन्दर तीन चीज़ों का होना ज़रूरी है:

(1) ख़ुदा की तरफ़ से तौफ़ीक़ का मिलना

(2) अन्दर से एक नसीहत करने वाला और एक रोकने वाला

(3) अगर कोई नसीहत करे तो उसकी नसीहत को मानने की चाहत।

– ख़ुदा की तरफ़ से तौफ़ीक़ का मिलना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि इसके बिना हम कोई भी नेक अमल या अच्छा काम नहीं कर सकते यानी दुनिया व आख़िरत में कामयाब नहीं हो सकते। इसलिए ख़ुदा से हमेशा तौफ़ीक़ माँगते रहना चाहिए।

– अन्दर से नसीहत करने वाला इन्सान का ज़मीर है जो उसे नेक और अच्छे कामों पर उभारता है। साथ ही उसे बुरे कामों से रोकता और ग़लतियों पर टोकता भी है। इसका होना इसलिए ज़रूरी है ताकि इन्सान शैतान के जाल में फंसने से बच जाए।

– दूसरों की नसीहत को मानने की चाहत उसी वक़्त जन्म लेती है जब इन्सान ख़ुद को दूसरों से अच्छा न समझे, ख़ुद को बुराईयों या ख़राबियों से पाक न जाने और अपने सुधार की कोशिश करता रहे।

ऐसा इन्सान दूसरों की तरफ़ से मिलने वाली नसीहत पर न सिर्फ़ यह कि बुरा नहीं मानता बल्कि नसीहत करने वाले का शुक्रिया भी अदा करता है।

(2)

अपने मोमिन भाईयों से मुलाक़ात करना इन्सान के दिल को पाक व नूरानी बनाता है और अक़्ल को बढ़ाता है।

इस्लाम ने मोमिन भाईयों से मिलने-मिलाने और एक-दूसरे से मुलाक़ात पर बहुत ज़ोर दिया है। इमाम ने इस हदीस में इसके दो फ़ायदे बताये हैं:

1- मोमिन भाई से मुलाक़ात की वजह से इन्सान का दिल पाक और नूरानी होता है। इसका मतलब यह है कि एक मोमिन की दूसरे मोमिन से मुलाक़ात सिर्फ़ टाइम पास करने के लिए नहीं होती। दो मोमिन जब भी एक-दूसरे से मिलते हैं तो ख़ुदा के लिए मिलते हैं और उनके सामने दुनिया नहीं बल्कि आख़िरत होती है।

2- दूसरा फ़ायदा यह है कि इस मुलाक़ात से उनकी अक़्ल बढ़ती है। अक़्ल के बढ़ने का मतलब यह है कि वह जब बातें करते हैं तो उस से उनकी जानकारियाँ और उनका इल्म बढ़ता है यानी जिहालत दूर होती है, दोनों बहुत सी बातें एक-दूसरे से समझते हैं, जो एक जानता है वह दूसरे को बताता है और दोनों अपनी-अपनी उलझनें व दुख-दर्द भी एक-दूसरे से मिल कर ठीक करते हैं।

(3)

बुराईयाँ और शर फैलाने वाले इन्सान की दोस्ती से दूर रहो क्योंकि वह नंगी तलवार की तरह होता है जो देखने में तो बड़ी अच्छी लगती है लेकिन उसका असर बहुत बुरा होता है।

शर फैलाने वाला इन्सान वह है जिसके दिमाग़ में हमेशा दूसरों को सताने या परेशान करने के प्लान बनते रहते हैं और वह दूसरों को सिर्फ़ नुक़सान पहुँचाने के बारे में सोचता रहता है। यह सब करके उसे बड़ा सुकून मिलता है। ऐसे इन्सान से दोस्ती से मना किया गया है क्योंकि ऐसा आदमी अपने साथियों को भी आसनी से अपने रास्ते पर लगा लेता है।

इस हदीस में शर फैलाने वाले इन्सान की एक

29 ज़ीक़ादा शहादत इमाम मोहम्मद तक़ी अ०

क्वालिटी यह बताई गई है कि उसका ज़ाहिर ऐसा होता है कि बहुत से लोग उसे देख कर उसे अच्छा समझ बैठते हैं। ऐसा आदमी अपनी बातों और अपने कुछ ख़ास कामों से दूसरों को अपनी तरफ़ खींचने में बहुत एक्स्पर्ट होता है। ऐसे आदमी से दूर रहने ही में भलाई है।

(4)

अगर कोई किसी की कोई भी बात सुनकर उस पर अमल कर ले तो वह ऐसे ही है जैसे उसने उसकी इबादत कर ली हो। अगर बोलने वाला ख़ुदा की बात कर रहा है तो सुनने वाले ने ख़ुदा की इबादत की है और अगर बोलने वाला शैतान की ज़बान से बोल रहा है तो सुनने वाले ने शैतान की इबादत की है।

– हम लोग बहुत से बड़ों या उलमा का लिबास पहने उलमा रूपी लोगों की बातें सुनते और उन पर अमल करते हैं लेकिन हमें सोचे-समझे बिना दूसरों की बातें सुनने और आंख बंद करके दूसरों की बातों को मानने से रोका गया है। यह बात करने वाला आदमी किसी पढ़े लिखे इंसान के रूप में हमारे सामने कोई बात कह रहा होता है और हम समझते हैं कि यह स्कॉलर, यह बड़ी डिग्री रखने वाला या मिंबर पर बैठा हुआ आदमी जब यह बात कह रहा है तो ठीक ही कह रहा होगा। ऐसा सोचना ग़लत है क्योंकि बोलने वाला या तो ख़ुदा की ज़बान बोलता है या शैतान की ज़बान।

ऐसे में सुनने वाला या ख़ुदा की बात सुन रहा होता है या शैतान की। जब ऐसा है तो वह या तो ख़ुदा की बात पर अमल कर रहा होता है या शैतान की बात पर यानी वह या तो ख़ुदा की इबादत कर रहा होता है या शैतान की।

– इसलिए सुनने वाले को बोलने वालों की बातों पर अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि उलमा के रूप में दिखने वाला यह आदमी शैतान की ज़बान बोल कर चला गया हो और हम उसे ख़ुदा की ज़बान समझते रहे हों।

इसलिए यह समझना ज़रूरी है कि बोलने वाला मोमिनों को जोड़ने की बात कर रहा है या तोड़ने की, मोमिनों में फूट डाल रहा है या उन्हें आपस में मिला रहा है, अक़ीदों को तोड़-मरोड़ कर पेश कर रहा है या सही बात कह रहा है या फिर क़ुरआन, अहलेबैत अ० और अक़्ल को सामने रखकर बात कर रहा है या जो भी मन में आया कहे जा रहा है, उलमा की तौहीन (इन्सल्ट) कर रहा है या उनके एहतेराम की बात कर रहा है, इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मनों को ख़ुश कर रहा है या ख़ुदा को।

(5)

अगर कोई तुम्हारे पास तुम्हारी लड़की के रिश्ते के लिए आए और तुम्हें उस के दीनदार और अमानतदार होने का भरोसा हो तो उसे रिश्ता दे दो वरना तुम ज़मीन पर किसी बड़े फ़ितने और बड़ी भयानक बुराईयों के फैलने की वजह बन सकते हो।

– इस्लाम में शादी की बुनियाद दीन, ईमान और अख़्लाक़ (कैरेक्टर) पर रखी गई है। अगर यह चीज़ें किसी जवान के अन्दर पाई जाती हैं तो अहलेबैत अ० का मश्वरा है कि ऐसे मोमिन जवान के साथ बेटी का रिश्ता कर देना चाहिए क्योंकि अगर किसी के अंदर यह क्वालिटीज़ पाई जाती हैं तो बाक़ी चीज़ों के लिए ख़ुदा ख़ुद रास्ते खोल देता है।

अगर किसी ने इन चीज़ों को छोड़ कर पैसे, बैंक-बैलेंस, जॉब या सोशल स्टेटस वग़ैरा को शादी करने की कसौटी बना ली तो ज़रूरी नहीं है कि बेटियों को वह ख़ुशियाँ और सुकून मिल ही जाए जिसके लिए उन्हें पराये घर में भेजा गया है।

– एक आदमी ने इमाम हसन अ० के पास आकर अपनी बेटी के रिश्ते के लिए मश्वरा मांगा तो इमाम अ० ने फ़रमायाः उसकी शादी किसी मोमिन और मुत्तक़ी इन्सान से करो क्योंकि अगर वह तुम्हारी बेटी को पसन्द करता होगा तो उसे बहुत ख़ुश रखेगा और अगर उसे पसन्द नहीं भी करता होगा तो उस पर ज़ुल्म-ज़्यादती नहीं करेगा।

– आज हम समाज में बहुत से नमूने देख सकते हैं कि धन-दौलत या ख़ानदान देख कर और ढेरों जहेज़ देकर माँ-बाप ख़ुशी-ख़ुशी अपनी बेटियों को बियाहते हैं लेकिन चूँकि सामने वाले के पास दीन-ईमान नहीं होता इसलिए बेटी को पल भर का भी सुकून नहीं मिलता।

यक़ीन जानिये कि ख़ुदा, रसूल स० और अहलेबैत अ० के बताए हुए ज़िन्दगी के क़ानूनों को अपनाने ही में हम सबकी भलाई है और जितना हम उन से दूर होते जाएंगे उतनी ही बर्बादी है।

किचन

recipe

यख़नी पुलाव

मुर्ग़ (पूरा): एक अदद
साबुत इलायची: 4 अदद
काली मिर्च: 10 अदद
नमक: साढ़े तीन चमच
प्याज़: 2 अदद
लौंग: 3 अदद
बासमती चावल: ढाई कप
घी: 5 खाने के चम्मच
लहसुन: 2 जवे (कुचले हुए)
अदरक: (कुचली हुई) आधा चाय का चम्मच
गरम मसाला: आधा चाय का चम्मच
पिसी इलायची: आधा चाय का चम्मच
गुलाब का अर्क़: 3 खाने के चम्मच
किशमिश: चौथाई कप
बादाम: (फ़्राई किये हुए) चौथाई कप
मटर के दाने: (फ़्राई किये हुए) एक कप
उबले हुए अण्डे: 3 अदद (दो-दो टुकड़े कर लें)

तरकीब

1- मुर्ग़ इलायची, काली मिर्च, प्याज़, लौंग और नमक पानी में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दें। एक से डेढ़ घंटे तक इतना पकने दें कि यख़नी बन जाए। अब चूल्हे से उतार कर ठण्डा कर लें।

2- गोश्त बाहर निकाल लें। यख़नी कम से कम चार कप ज़रूर होनी चाहिए। गोश्त को हड्डियों से अलग कर लें और छोटे-छोटे टुकड़ों में काट कर एक तरफ़ रख दें।

3- चावल अच्छी तरह धो लें और छलनी में रख कर सूखने के लिए छोड़ दें। चावल थोड़े ख़ुश्क हो जाएं तो एक बड़े बर्तन या देगची वग़ैरा में घी डाल कर प्याज़ भून लें कि सुनहरी हो जाए। अब इसमें लहसुन और अदरक डाल कर एक-दो मिनट तक और भूनें। इस बीच चमचा बराबर चलाती रहिए।

4- इसके बाद चावल भी मिला दीजिए और हल्की आँच पर पाँच मिनट तक भूनिए। इस बीच सूराख़ दार चम्चे से बराबर चलाती रहिए।

5- अब देगची में गर्म यख़नी, गरम मसाला, पिसी इलायची, डेढ़ खाने का चम्मच नमक, गुलाब जल, किशमिश और गोश्त डाल दें और अच्छी तरह चलाएं। फिर देगची को ढक दें और धीमी आँच पर बीस मिनट तक पकने दें। इस बीच ढक्कन न हटाएं और न ही चम्मच चलाएं।

6- चावल पक जाएं तो चूल्हे से उतार लें। डिश में धीरे से निकाल लें। बादाम, मटर के दानों और अण्डों से सजा कर सर्व कीजिए।

खट्टे आलू की कचौरी

मैदाः ढाई प्याली
आलूः 2 अदद मीडियम साइज़ के
नमकः ज़ायके के हिसाब से
लहसुन के जवेः 2 अदद
कश्मीरी लाल मिर्चः एक अदद
सफ़ेद ज़ीराः एक चाय का चम्मच
हल्दीः आधा चाय का चम्मच
इमली का पेस्टः एक खाने का चम्मच
डबल रोटी का चूराः 2 खाने के चम्मच
कुकिंग आयलः ज़रूरत के हिसाब से

तरकीब

1- मैदे में नमक डाल कर मिलाएं। फिर तीन चौथाई प्याली पानी में एक चौथाई प्याली कुकिंग आयत डाल कर अच्छी तरह मिलाएं और उस से मैदे को नर्म-नर्म गूँध लें।

2- खट्टे आलू बनाने के लिए उबले हुए आलुओं के छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। कश्मीरी मिर्च को काट कर ज़ीरा और लहसुन के साथ बारीक पीस लें।

3- नॉन स्टिक फ़ाइंग पैन में हलका सा कुकिंग आयल लगाकर उसमें लहसुन ज़ीरे वाले मसाले को भूनें। फिर उसमें हल्दी, नमक और आलुओं को डाल कर लकड़ी के चम्मच से कुचल लें। साथ-साथ इमली का रस भी मिला दें।

4- आलू का अच्छी तरह भुर्ता बन जाए तो चूल्हे से उतार कर पूरी तरह से ठण्डा हो जाने दें और उसमें डबल रोटी का चूरा मिला लें।

5- गुंधे हुए मैदे के छोटे-छोटे पेड़े बनाएं और उनके बीच में एक चाय का चम्मच खट्टे आलू का भुर्ता रख कर बन्द कर दें।

6- एक हाथ की हथेली पर रख कर दूसरे हाथ की हथेली से हलके-हलके दबा कर उसे फैला कर कचौरी बना लें और गर्म कुकिंग ऑयल में सुनहरी फ़ाई करे लें। कचौरियाँ तैयार हैं।

■ अल्लामा अली नक़ी नक़वी

इन्सान सबसे अच्छा क्यों है ?

''हम ने इन्सान को बहतरीन साख़्त (बहतरीन सूरत) में पैदा किया है।''[1]

यह क़ुरआनी आयत बता रही है कि अल्लाह ने इन्सान को सबसे अच्छा बनाया है। दुनिया ने इन्सान के असली स्टेटस को नहीं समझा, इसलिए इन्सान के सही असली रोल का भी सही से पता नहीं लग सका और दुनिया ने इन्सान को उस तरह से नहीं देखा जिस तरह से देखना चाहिए था।

ज़ाहिर है कि मक़सद हमेशा ज़रिये से ऊँचा होता है। जिस चीज़ का स्टेटस नीचा होगा उसका मक़सद उसी हिसाब से नीचा होगा और जो चीज़ बुलन्द होगी उसका मक़सद भी उसी हिसाब से बुलन्द होगा।

अगर इन्सान अपने स्टेटस और मुक़ाम को समझ ले तो उसे अपने मक़सद और ज़िन्दगी की बुलन्दी का एहसास भी हो जाएगा और यही उसके किरदार के बड़े होने की गारन्टी भी होगी। फिर इसी चीज़ को समझ लेने के बाद उसकी असली तरक़्क़ी या असली गिरावट को समझना भी आसान हो जाएगा क्योंकि हर चीज़ की तरक़्क़ी उस ख़ास चीज़ की तरक़्क़ी के साथ जुड़ी होती है जो उसकी असली क्वालिटी है।

अगर इन्सान पूरी दुनिया से अलग कोई चीज़ होता तो उसका समझना आसान होता मगर यह तो दुनिया की दूसरी सारी चीज़ों के साथ बहुत सी क्वाजिटीज़ में एक जैसा है। इन्सान के पास जिस्म है और इस हिसाब से यह पत्थरों जैसा है। फलता-फूलता है और इस हिसाब से पेड़ों के बराबर है। एहसास व इरादा रखता है इस हिसाब से जानवरों जैसा हैं और फिर इसके पास एक ख़ास चीज़ भी है जिसकी वजह से यह इन्सान है और दूसरी सारी चीज़ों से अलग है।

इन्सान को अगर उस हिसाब से देखा जाए जिसमें इन्सान दूसरों के साथ एक जैसा है तो उसे सबसे बड़ा और सबसे अच्छा समझना ही ग़लत होगा क्योंकि इन सारी चीज़ों में वह दूसरों से कम नज़र आएगा। जिस्म के हिसाब से वह पहाड़ों के बराबर नहीं है, फलने-फूलने में पेड़ों जैसा नहीं है। सुनने, देखने और सूँघने की ताक़त में बहुत सारे जानवर इन्सान से बहुत आगे हैं। इस से पता चलता है कि इन्सान इन चीज़ों में दूसरों से आगे नहीं है।

असल में इन्सान की अज़मत उस ख़ास क्वालिटी की वजह से है जो सिर्फ़ इन्सान के अंदर है और किसी दूसरे में नहीं है। वह क्या चीज़ हो सकती है। वह है इल्म और अमल।

इन्सानी इल्म व अमल

अगर इल्म का मतलब बस जानना है और यही आज के ज़माने में इल्म की कसौटी समझा जाता है तो दुनिया के मुल्कों की लम्बाई-चौड़ाई और आबादी जान लीजिए, पहाड़ों की ऊँचाइयाँ और दरियाओं की गहराईयाँ जान लीजिए, ज़मीन से सूरज-चांद की दूरी जान लीजिए, पेड़-पौधों और पत्थरों की क्वालिटी का पता लगा लीजिए।

अगर यही इल्म यानी ''जानना'' इन्सान की ख़ास क्वालिटी है तो कौन कहता है कि जानवरों के पास इल्म नहीं है। जानवर भी बहुत कुछ जानते हैं। जानवर अपने रहने की जगह को जानते हैं, अपने खाने-पीने की चीज़ों के बारे में जानते हैं, अपने रिज़्क़ देने वाले को पहचानते हैं, अपनी सेहत के उसूल जानते हैं। इसी लिए जंगल में कोई जानवर बीमार नहीं पड़ता लेकिन इन्सानों के माहौल में आकर वह बीमार पड़ने लगते हैं।

इसी तरह अगर अमल का मलतब बस कुछ न कुछ काम करना है तो जानवर भी अमल करते हैं। वह अपनी कोशिश भर अपने खाने-पीने के रास्तों को ढूँढ निकालते हैं। इस रास्ते में आने वाली हर रुकावट को दूर करते हैं और अपने सामने आने वाले हर ख़तरे से अपनी ताक़त भर मुक़ाबला करते हैं।

फिर आख़िर वह इल्म और अमल कौन सा है जो सिर्फ़ इन्सान के लिए है ?

हम जहाँ तक समझ सके हैं वह यह है कि दो बातों की वजह से इन्सान इल्म में सबसे आगे है। एक यह कि जानवरों का इल्म उनके ज़ाहिरी सेंसेस से आगे काम नहीं करता। अभी ऊपर जो हम ने कहा था कि जानवर अपने रिज़्क़ देने वाले को पहचानते हैं यह बात पूरी तरह से सही नहीं है। मतलब यह था कि वह सिर्फ़ उसे पहचानता है जिसके हाथ से खाना-पानी पाता है। जानवर उसे कभी नहीं पहचान पाता जो असल रिज़्क़ का देने वाला है। अगर उसके सामने नहीं आता और अपने हाथ से उसका पेट नहीं भरता तो जानवर उसे नहीं पहचानेगा।

अब अगर इन्सान का इल्म भी ऐसा हो कि जिस मालदार से मिला उसी को नेमत देने वाला जान लिया या जिसने सेलरी दी उसी को ख़ुदा समझ लिया तो फिर जानवर और इन्सान में कोई

फ़र्क़ नहीं रहेगा।

इन्सान की क्वालिटी यह है कि वह इस सामने की दुनिया से बाहर निकलकर अपनी अक़्ल की मदद से कुछ सच्चाईयों का पता लगा लेता है और वही उसके ग़ैब पर ईमान का सोर्स होता है।

दूसरी बात यह है कि जानवरों का इल्म कम होता है यानी जितना उसे दिया गया है बस उतना ही है। शहद की मक्खी बस शहद के छत्ते बनाना जानती है और बहुत अच्छे बनाती है क्योंकि कोई भी इंजीनियर इतने अच्छे छत्ते नहीं बनाता लेकिन छत्ते का जो रूप उसके नेचर में डाल दिया गया है वह बस वैसा ही बना सकती है। स्क्वायर और ट्रैंगिल वग़ैरा नहीं बना सकती।

इसी तरह मकड़ी भी शानदार जाल बनाती है मगर अपने जाल का रूप बदलना उसके बस में नहीं है।

इसके उलट इन्सानी इल्म ? इनसान का काम है कि जो चीज़ें उसे पता हैं उन्हें काम में लाकर उन नई चीज़ों का पता लगाना जो उसे पता नहीं हैं। इन्सान अपने इल्म में लगातार आगे बढ़ता रहता है।

अमल के मैदान में भी इन्सान की ख़ास बात यह है कि जानवर जो कुछ भी करता है अपने नेचर के हिसाब से करता है मगर इन्सान में सूझबूझ या सही-ग़लत के फ़र्क़ की सलाहियत पाई जाती है। इसी हिसाब से इन्सानों की इन्सानियत के लेवेल और दर्जे तय किये जाते हैं।

बहुत सारे लोग ऐसे हैं जिनकी शक्लें तो इन्सानों जैसी हैं मगर कैरेक्टर जानवरों वाला है। जैसे वह लोग जिनके काम उनके मिज़ाज के हिसाब से होते हैं। मान लीजिए कि एक आदमी के नेचर में ज़रूरत से ज़्यादा ग़ुस्सा है यानी वह बारूद का ढेर है, ज़रा-ज़रा सी बात पर भड़क उठता है। वह अपने इसी गर्म मिज़ाज की वजह से कुछ ऐसे भी काम कर लेता है जिनका रिज़ल्ट अच्छा निकल सकता है जैसे किसी मज़लूम की हिमायत में उसे ग़ुस्सा आ जाए और वह बढ़ कर ज़ालिम का मुक़ाबला करे मगर चूँकि उसका ग़ुस्सा उसके नेचर की वजह से है इसलिए दूसरे वक़्त में हो सकता है कि वह ख़ुद ही किसी बेगुनाह पर ज़ुल्म कर बैठे। अपने इसी ग़ुस्से की वजह से इन्सान ऐसे-ऐसे काम भी कर डालता है जो अक़्ल और शरीअत की नज़र में किसी भी हाल में अच्छे नहीं हो सकते।

इसके उलट वह आदमी है जो गीली मिट्टी का बना हुआ है जिसे कभी ग़ुस्सा ही नहीं आता। यह आदमी हो सकता है कि किसी ऐसी जगह पर चुप रह जाए जहाँ कोई भी क़दम उठाना किसी बड़े झगड़े की वजह बन जाने वाला हो। सामने की बात है कि हर आदमी उसकी तारीफ़ करेगा कि बहुत अच्छा आदमी है क्योंकि इसने अपनी समझदारी और अपने सब्र से कितने बड़े झगड़े को रोक लिया। जबकि उसकी यह चुप्पी इसलिए नहीं थी कि उसे अपने किसी फ़र्ज़ या ड्युटी का एहसास था बल्कि ऐसा उसने अपने नेचर की वजह से किया था। इसलिए यही आदमी ऐसी जगहों पर भी चुप रह जाएगा जहाँ चुप रहना किसी ज़ालिम की हिम्मत बढ़ा सकता है। यह कैरेक्टर इन्सानी कैरेक्टर नहीं है।

इन्सानी कैरेक्टर

इन्सान की बड़ाई अक़्ल का इस्तेमाल करने और अपनी ज़िम्मेदारी की पहचान में है। जैसी यह क्वालिटी इन्सान के अंदर होती है उसी हिसाब से इन्सान की बुलन्दी और गिरावट का भी पता चलता है। यही वह तक़वा है जिसे क़ुरआन ने इन्सान के अच्छा होने की कसौटी बताया है:

''तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो।''[2]

इन्सानों की ज़िम्मेदारियाँ एक तरह की नहीं होतीं। कोई बड़े से बड़ा समझदार और पढ़ा-लिखा आदमी भी ज़िम्मेदारियों की कोई ऐसी लिस्ट नहीं बना सकता जिन्हें हर इन्सान हर हाल में पूरा कर सकता हो।

सच बोलने ही को लीजिए। बेशक! हर इन्सान की ड्युटी है कि वह सच बोले लेकिन क्या हर जगह और हर हाल में सच बोलना चाहिए ? जैसे अगर कोई ज़ालिम किसी आदमी के पीछे पड़ा हो और वह आदमी उसकी नज़र बचा कर हमारी आँखों के सामने कहीं छुप जाए। अब अगर वह ज़ालिम हम से पूछे कि क्या तुम ने देखा है वह किधर गया है ? तो क्या अब भी हमें सच ही बोलना चाहिए ? सामने की बात है कि अगर हम ने सच-सच बता दिया तो ज़ालिम की तलवार होगी और मज़लूम का गला। साथ ही इस ख़ून की ज़िम्मेदारी भी हमारे सच पर होगी।

बहुत से बड़े गुनाह ऐसे हैं जो सच बोलने की वजह से ही होते हैं जैसे लगाई-बुझाई करना, चुग़ली करना। यह सब सच ही होता है, झूठ नहीं होता मगर है बहुत बड़ा गुनाह। इसी तरह ग़ीबत भी बड़ा गुनाह है। ग़ीबत भी सच बोलने की वजह से ही होती है।

इसका मतलब यह है कि हर हाल में सच बोलना इन्सानी ज़िम्मेदारी नहीं है।

इसी तरह किसी की अमानत वापस करना है। यह भी एक इन्सानी ज़िम्मेदारी है लेकिन अगर कोई ज़ालिम किसी आदमी को क़त्ल करना चाहता हो और इत्तिफ़ाक़ से उसने अपनी तलवार हमारे पास अमानत के तौर पर रखवाई हो और अब इस वक़्त वह अपनी तलवार हम से माँगे तो हम क्या करेंगे ? किसी भी हाल में उसकी यह अमानत यानी तलवार वापस नहीं करना चाहिए वरना इस क़त्ल में हमारा हाथ भी गिना जाएगा।

दीन की नज़र में इबादतों में सबसे बड़ी ड्युटी नमाज़ है लेकिन अगर कोई आदमी डूब रहा हो और उसको बचाने के लिए नमाज़ तोड़ना ज़रूरी हो तो नमाज़ का तोड़ देना वाजिब होगा। अगर वह डूब गया और हम नमाज़ पढ़ते रहे तो यह नमाज़ ख़ुदा की बारगाह से लौटा दी जाएगी कि मेरा बन्दा डूब गया और तुम नमाज़ पढ़ते रहे, मुझे ऐसी नमाज़ नहीं चाहिए।

इसका मतलब यह है कि ज़िम्मेदारियाँ और इबादतें, हालात और जगह या वक़्त के हिसाब से बदलती रहती हैं। अगर हालात, वक़्त और जगह को देखकर अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा किया जाए तो यही इन्सानियत की असलियत है।

अपने फ़र्ज़ और अपनी ड्युटी को बचाने वाले इन्सान के काम उसके नेचर के मुताबिक़ नहीं होते बल्कि फ़र्ज़ के मुताबिक़ होते हैं। उसके कामों में इंसाफ़ और बैलेंस होता है, जो एक अच्छे अख़्लाक़ की कसौटी है।

आम लोग अपने नेचर से बंधे होते हैं और वह बैलेंस की हालत से आगे बढ़ जाते हैं या उस से बिल्कुल पीछे रह जाते हैं, इसलिए बड़े इन्सानों के ख़िलाफ़ दोनों तरफ़ से एतेराज़ होते हैं, लेकिन वह कभी भी उनकी तरफ़ ध्यान नहीं देते क्योंकि उन्हें तो अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने से मतलब होता है।

1-सूरए तीन/4, 2-सूरए हुजुरात/13

■ डॉ. मुजतबा कौसरी

ज़रा इस पर भी ध्यान दीजिए

एक जवान जोड़ा मेरा पास आया। बीवी को अपने शौहर से कुछ शिकायतें थीं जैसे उनका बिहैवियर अच्छा नहीं है, डिसिप्लिन का ध्यान नहीं रखते, फ़ैमिली की तरफ़ ध्यान नहीं देते, हमारी सोशल, साइकॉलोजिकल और रूहानी ज़रूरतों का ध्यान नहीं रखते वग़ैरा। ऐसे मौक़ों पर शुरु में यही लगता है कि प्रॉब्लम छोटी सी है लकिन जब हम गहराई में उतर कर देखते हैं तब जाकर असली प्रॉब्लम का पता चलता है। उस जवान जोड़े के साथ जब हम ने कई सिटिंग्स और बातें कीं तो पता चला कि बीवी अब शौहर के साथ नहीं रहना चाहती बल्कि उस से अलग होना चाहती है। हमारे पास आने की वजह सिर्फ़ यह थी कि हम भी उसका साथ दें और एक काउंसिलर की हैसियत से उसे हरी झण्डी दिखा दें। वह मुझ से कहने लगीं, ''अगर मेरे घर वालों को पता चल जाए कि मेरे साथ यह प्रॉब्लम है तो वह मुझे यही एडवाइस देंगे कि शौहर से अलग हो जाओ। सबसे बड़ी प्रॉब्लम यह है कि मेरा शौहर न सिर्फ़ नमाज़ नहीं पढ़ता बल्कि नमाज़ पर ईमान भी नहीं रखता।'' जब मैंने उसके शौहर से पूछा तो उसने कहा, ''जब यह नमाज़ की बात करती है तो मुझे न सिर्फ़ नमाज़ से और इस से बल्कि हर उस आदमी से नफ़रत होने लगती है जो नमाज़ की बात करता है और नमाज़ पढ़ता है''।

सबसे मज़े की बात यह है कि उसके माँ-बाप बहुत दीनदार थे और वह एक दीनी घर में पला बढ़ा था। अब यहाँ यह सवाल उभरता है कि नमाज़ जैसी अहम चीज़ से नफ़रत की वजह क्या हो सकती है जिसे हम दीन का सबसे बड़ा पिलर मानते हैं। जब हम ने रिसर्च की तो पता चला कि उस जवान का बाप एक कट्टर दीनदार आदमी तो था मगर उसके पास अच्छा अख़्लाक़ और दीन की समझ नहीं थी। जब वह बच्चों को नमाज़ पढ़ने के लिए कहता था तो उन्हें डाँट-डपट कर नमाज़ का हुक्म देता था, उन्हें ज़बरदस्ती नमाज़ पढ़वाता था जैसे वह एक फ़ौजी कमाण्डर हो और उसके बच्चे उसके इशारों पर काम करने वाले सिपाही हों। उस जवान ने मिसाल देते हुए बताया कि एक दिन वह घर में लेटा हुआ था, बाप आया और उसे लात मार कर नमाज़ के लिए उठाया और बहुत गन्दी ज़बान इस्तेमाल करते हुए कहने लगा, ''गधों की तरह पड़े रहते हो! शर्म खाओ ज़रा, उठ कर नमाज़ पढ़ो!'' बाप के इस बुरे अख़्लाक़ और ग़लत बर्ताव की वजह से जब तक मैं उस घर में था तब तक नमाज़ पढ़ता रहा, लेकिन शादी के बाद जब मैं अलग हुआ तो मुझे न सिर्फ़ नमाज़ से बल्कि दीन से और दीनदारों से भी सख़्त नफ़रत थी। दीन से नफ़रत और दूरी की असली वजह थी उसके साथ उसके बाप का बुरा बर्ताव।

उस जवान के बाप की नियत बुरी नहीं थी क्योंकि वह चाहता था कि उसका बेटा दीनदार और नमाज़ी बने लेकिन उसका तरीक़ा बिल्कुल अच्छा नहीं था। कहा जाता है कि अगर तुम्हें किसी अच्छे काम को भी बुरा बनाना हो और लोगों को उस से दूर करना हो तो उसके लिए बुरा तरीक़ा अपना लो, लोग अपने आप उस अच्छे काम से दूर हो जाएंगे। लोगों को दीन से दूर करने का सबसे आसान तरीक़ा यही है।

फ़ैमिली के अन्दर हमारे रिलेशन्स दो तरह के होते हैं और दोनों की रेंज अलग-अलग होती है। एक रिलेशन ज़बान और बातचीत के ज़रिये बनता है और दूसरा अमल के ज़रिये। क़ुरआन की नज़र में अमल के ज़रिये जो रिलेशन बनता है वह ज्यादा मज़बूत होता है और उसकी रेंज व असर भी ज़्यादा होता है। क़ुरआन फ़रमाता है: ''ऐ ईमान लाने वालो! वह बात क्यों कहते हो जिस पर अमल नहीं करते।'' क़ुरआन की नज़र में अपनी बात पहुँचाने और किसी को किसी काम की तरफ़ बुलाने का सबसे अच्छा तरीक़ा अमल है। मैं अकसर अपने क्लाइंट से पूछता हूँ, ''आख़िरी बार आप ने अपने बच्चों या लाइफ़ पार्टनर को अपने अमल के ज़रिये कोई चीज़ सिखाने या बताने की कोशिश कब की थी?'' उस वक़्त भी जवाब में सब यही

कहते हैं कि हम ने उन से कहा या उन से बात की। जबकि इन दोनों में बहुत फ़र्क़ पाया जाता है और उनका असर भी अलग-अलग होता है। अमल के ज़रिये जो बात समझाई जाती है उसका असर ज़बान के ज़रिये समझाने से 80% ज़्यादा है। इसलिए ज़बान और अमल दोनों का सहारा लेना चाहिए। अगर ज़बान के ज़रिये कुछ कहना हो तो उसका असर उसी वक़्त होगा जब उस पर अमल भी हो रहा हो।

तीसरी बात यह है कि जब हम बच्चों को कोई चीज़ सिखाना या समझाना चाहते हैं तो उसके लिए ज़रूरी है कि इन्सानी और दीनी वैल्यूज़ के लिए उसके दिल में मोहब्बत डाली जाए।

जी हाँ! हम बात कर रहे थे उस जोड़े की और उस जवान की जिसे दीन से और दीनदारों से नफ़रत थी और वह हमारी बातों को मानने से साफ़ इनकार कर रहा था बल्कि सोसाइटी और युनिवर्सिटी में जहाँ भी उसे मौक़ा मिलता था वह अपनी उसी ग़लत सोच को फैला रहा था। आमतौर से ऐसा ही होता है कि इन्सान को जब किसी चीज़ से मोहब्बत या नफ़रत हो जाती है तो उसका साइकॉलोजिकल सिस्टम इसी मोहब्बत और नफ़रत के मुताबिक़ काम करता है। ऐसे में ज़रूरी है कि वह उसूल जिनकी बुनियाद पर उसके अन्दर नफ़रत पैदा होनी चाहिए उन उसूलों की दीवारों को गिरा करके सही उसूलों की दीवारें खड़ी की जाएं और उन पर नई बिल्डिंग बनाई जाए।

हमारे केस में ख़ुशी की बात यह है कि यह जोड़ा जो एक-दूसरे से अलग होना चाहता था, उस ने अपना फ़ैसला बदल दिया था। शुरु में शौहर की तरफ़ से बहुत सख़्त रीएक्शन सामने आया था और वह किसी भी चीज़ को मानने के लिए तैयार नहीं हो रहा था लेकिन आगे चल कर जब उन्हें हमारा तरीक़ा ठीक लगा और हमारी तरफ़ से पेश किये जाने वाले सेशन उन्हें अच्छे लगे तो हम ने हर चीज़ के बारे में उनकी सोच, फ़ीलिंग्स और रीएक्शन को धीरे-धीरे बदल कर उन्हें असल पिक्चर दिखा दी थी।

हमारे केस में सबसे ख़ास बात जिसकी तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है, वह यह है कि परवरिश करने, वैल्यूज़ सिखाने और किसी के बर्ताव को बदलने के सही तरीक़ों को जानना और उन पर अमल कैसा किया जाए यह सीखना बहुत ज़रूरी है। अकसर लोगों और घरानों में हम देख सकते हैं कि माँ-बाप या बड़े हमदर्दी करना चाहते हैं लेकिन यह भूल जाते हैं कि इन्सान की साइकॉलोजी और उसकी रूह की परवरिश करना कोई खेल नहीं है और अगर कोई खेल हो भी तो इस मैदान में माहिर खिलाड़ियों की तरह काम करने की ज़रूरत है, अनाड़ी बन कर परवरिश का काम उस इन्सान की रूह और दिल को नुक़सान पहुँचा सकता है। शायद यह बात अकसर माँ-बाप की समझ से बाहर हो कि बच्चे की परवरिश में जो ग़लती उन से हुई है वह उस बच्चे के जवान होने के बाद उसकी फ़ैमिली लाइफ़ में बड़ी प्रॉब्लम की वजह बन सकती है।

इसलिए सोच-संभल कर क़दम उठाइये और जो भी कीजिए बहुत ध्यान से।

HK

KAZIM
Zari Art

All kinds of
Sarees, Suits, Lehnga
& Designer Wedding Gown

Work shop
Ahata Dhannu Beg, kazmain Road
Sa'adat ganj, Lucknow

Showroom
1st floor, Doctor Gopal Pathak Building
latouch road, Hevett road Lucknow

Contact No.
+91-9795907202, 9839126005

■ दिलावर अहमद बट

मुझे अब्दुल ग़फ़ूर जैसी मौत आए!

वह हर मिलने वाले से सिर्फ़ एक ही बात कहते थे, ''मेरे लिए दुआ कीजिए कि मुझे मौत ईमान पर आए''। लोग उन्हें खुशहाली, तरक़्क़ी, सेहत और कुर्सी की दुआ देते थे लेकिन वह उसे रोक कर कहते थे, ''आपकी दुआ सर आँखों पर लेकिन मेहरबानी करके आप मेरे लिए सिर्फ़ इतनी दुआ कर दीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे अब्दुल ग़फ़ूर जैसी मौत नसीब कर दे!'' हम हैरान होकर पूछते थे, ''सर! यह अब्दुल ग़फ़ूर कौन था?'' मगर वह हमारा सवाल हंस कर टाल देते थे। अज़ीज़ साहब को अल्लाह ने सब कुछ दिया था, वह पढ़े-लिखे थे, 1970 की दहाई में हारवर्ड युनिवर्सिटी से बिज़नेस की डिग्री लेकर आए थे, वह पढ़ने के शौक़ीन थे, किताबों के ढेर पर सोते थे और किताबों के कम्बल में जागते थे, दुनिया में जो भी अच्छी किताब पब्लिश होती थी वह अज़ीज़ साहब तक ज़रूर पहुँचती थी और अज़ीज़ साहब उसे घोल कर पी जाते जाते थे। अल्लाह तआला ने उन्हें सेहत की नेमत से भी नवाज़ रखा था। वह 72 साल की उम्र में 22 साल के जवानों का जिस्म लेकर फिरते थे। उन्हें ज़िन्दगी में कभी सरदर्द नहीं हुआ था। वह पैदाईशी मालदार भी थे, वालिद साहब ज़मीनदार थे और एक इण्डस्ट्री के मालिक भी, वह कई फ़्लोर मिलों के मालिक थे अपने खेतों का गेहूँ पिस्वा कर बेचते थे और करोड़ों कमाते थे। माँ-बाप के इकलौते बेटे भी थे।

ख़ानदान का सारा माल-दौलत उन्हीं को मिला और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें नेक और पढ़ी-लिखी औलाद भी दी थी। वह हर हिसाब से एक शानदार ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे लेकिन वह इसके बावजूद हर वक़्त ख़ुद भी अब्दुल ग़फ़ूर जैसी मौत की दुआ करते थे और दूसरों से भी यही कहा करते थे। हम वजह पूछते थे तो वह कहते थे, ''बस अब्दुल ग़फ़ूर मुझे सीधा और सही रास्ता दिखा गया, अल्लाह तआ़ला उसे करवट-करवट जन्नत नसीब करे'' और वह इसके बाद ख़ामोश हो जाते थे। यह 1993 का हज था। मुझे उन्होंने बुलाया, बड़े प्यार से मिले और कहा, ''मैं हज पर जा रहा हूँ और शायद मैं वहाँ से वापस न आ सकूँ। बस बेटा! मुझे आप से सिर्फ़ एक दरख़्वास्त करनी थी और वह यह कि मैं आपको जब भी याद आऊँ तो आप मेरी औलाद के लिए ईमान पर मौत आने की दुआ कर देना''। मैंने हैरत से उनकी तरफ़ देखा और कहा, ''आप कैसे कह सकते हैं आप हज से वापस नहीं आएंगे और आप इस बार अपने बजाए अपनी औलाद के लिए दुआ क्यों करा रहे हैं?'' वह हंस कर बोले, ''आप मुझ से हमेशा अब्दुल ग़फ़ूर की कहानी सुनना चाहते थे, मैं समझता हूँ कि अब वह कहानी बताने और सुनाने का वक़्त आ गया है। आप अब्दुल ग़फ़ूर की दास्तान सुनिये, आप मेरी बात समझ जाएंगे'', वह रुके और फिर धीमी आवाज़ में बोले, ''अब्दुल ग़फ़ूर हमारी मिल में आदमी था जो बड़ा काम चोर, सुस्त और धोखेबाज़ था। वह मिल का गेहूँ और आटा चोरी करके बेच देता था। काम में भी सुस्ती करता था और जी भर कर निखट्टू भी था। हम ने कई बार उसे निकालने का फ़ैसला किया लेकिन फिर मैं अपने पापा की वजह से रुक जाता था। मेरे पापा ने नसीहत की थी कि मेरे बाद किसी आदमी को नौकरी से न निकालना। अब्दुल ग़फ़ूर मुझे पापा की तरफ़ से विरासत में मिला था, इसलिए मैं उसे बर्दाश्त करने पर मजबूर था।

अब्दुल ग़फ़ूर की ज़िन्दगी में किसी ने कभी न उसे नमाज़ पढ़ते देखा था और न ही कोई नेकी का काम करते देखा था। वह दबा कर सिग्रेट भी पीता था और चरस भी, वह पूरी ज़िन्दगी क़र्ज़दार भी रहा था।

हम हर साल अपने एक कारीगर को हज पर भिजवाते थे, हम उस कारीगर के लिए ड्रॉ निकालते थे, हम ने एक साल ड्रॉ निकाला तो अब्दुल ग़फ़ूर का नाम निकल आया। हम ने उसे हज की पेशकश की लेकिन उसने इनकार कर दिया, लोगों

ने उसे बहुत समझाया लेकिन वह नहीं माना। इसलिए हम ने दूसरे कारीगर को भिजवा दिया, अगले साल फिर उसका नाम निकल आया, अब्दुल ग़फ़ूर ने इस साल भी इनकार कर दिया। हम ने दोबारा ड्रॉ निकाला। दूसरी बार फिर उसका नाम आ गया, हम ने तीसरी बार कोशिश की फिर अब्दुल ग़फ़ूर का नाम आ गया, हम ने तजुर्बे के लिए चौथी बार अब्दुल ग़फ़ूर की पर्ची न डाल कर उसकी जगह ख़ाली पर्ची डाल दी थी। चौथी बार पर्ची निकाली तो वह ख़ाली निकली यानी अल्लाह तआला हर हाल में अब्दुल ग़फ़ूर को ही हज कराना चाहता था लेकिन वह नहीं मान रहा था। हम ने उस पर बहुत ज़ोर दिया मगर उसका कहना था कि मुझे तो नमाज़ भी नहीं आती, मैं हज करके क्या करूँगा? मैंने आख़िर में उसके साथ सौदा किया। मैंने उस से कहा कि तुम हज पर चले जाओ, मैं तुम्हें पूरे साल की सेलरी एडवान्स दे देता हूँ। वह लालच में आ गया, मैंने मोलवी साहब का बन्दोबस्त किया, मोलवी साहब ने उसे नमाज़ और हज का तरीक़ा सिखाया, दुआएं और आयतें याद कराईं और हम ने उसे हज पर भेज दिया। अब्दुल ग़फ़ूर हज पर गया, हज किया, तवाफ़ किया, अलविदा किया, इशा की आख़िरी नमाज़ पढ़ी, सजदे में गया और सजदे ही में मर गया, वह मरने के बाद देर तक सजदे में पड़ा रहा, साथियों में से किसी ने हिलाया तो पता चला अब्दुल ग़फ़ूर मर चुका है। आप अल्लाह के फ़ैसले देखिये, उस रात इमामे काबा का इन्तेक़ाल भी हो गया। अगली सुबह इमामे काबा का जनाज़ा था, अब्दुल ग़फ़ूर की मय्यत भी इमामे काबा के साथ हजर-ए-अस्वद के सामने रख दी गई और लाखों हाजियों ने उसका जनाज़ा पढ़ा। हमें ख़बर दी गई। हम से जनाज़े के बारे में पूछा गया, हम ने उसकी बीवी से पूछा। तो बीवी बेगम का कहना था कि अल्लाह तआला ने अगर उसे ख़ाना-ए-काबा बुलाया है तो फिर उसे दफ़न भी मक्का में कर दिया जाए। हम ने इजाज़त दे दी और वह यूँ मक्का में दफ़्न कर दिया गया। मैं उसके नसीब पर हैरान रह गया। मैं उसकी बीवी के पास गया और उस से अब्दुल ग़फ़ूर की ख़ुश क़िस्मती की वजह पूछी। बीवी ने एक अजीब बात बताई, उसका कहना थाः ''मेरे शौहर में कोई अच्छाई नहीं थी, उसने ज़िन्दगी में कभी कोई अच्छा काम नहीं किया था। मैं ख़ुद हैरान थी कि अल्लाह तआला ने उसे किस नेकी का इनाम दिया है। मैं कई दिन सोचती रही, फिर मुझे अचानक उसकी एक अच्छी आदत याद आई।

हमारे महल्ले में एक ख़ूबसूरत बेवा है, यह जवानी में बेवा हो गई थी। महल्ले के सभी लोफ़र उस पर बुरी नज़र डालते थे। उसकी दो छोटी बेटियाँ भी थीं, मकान उसको उसका मरहूम शौहर दे गया था। घर के ख़र्चे देवर ने उठा लिये थे लेकिन महंगाई में उसका गुज़ारा नहीं होता था। वह अपनी बेटियों को पढ़ाना चाहती थी, वह इसके लिए दूसरों के घरों में काम करने जाती थी लेकिन वह जहाँ जाती थी लोग वहाँ उसकी इज़्ज़त पर हाथ डाल देने की कोशिश करते थे। इसलिए वह काम छोड़ने पर मजबूर हो जाती थी। मेरे शौहर को पता चला तो वह उसकी ढाल बन गया। उसने उसे अपनी बहन बना लिया। उसने अपनी मुँह बोली बहन को घर बिठाया और उनकी दोनों बेटियों का स्कूल में एडमिशन करा दिया। वह लोगों से क़र्ज़ा लेकर, आपकी फ़ैक्ट्री से चोरी करके उन बच्चियों को पढ़ाता था। वह हफ़्ते दस दिन बाद अपनी मुँह बोली बहन के घर राशन भी देकर आता था लेकिन उसने राशन देते वक़्त या बच्चियों की युनिफ़ार्म, किताबें और फ़ीस देते हुए कभी उसके घर की दहलीज़ पार नहीं की थी, वह यह सारी चीज़ें एक बड़ी सी टोकरी में रखता था, वह टोकरी बेवा की दहलीज़ पर रख देता था। दरवाज़ा खटखटाता था और कहता था, मरयम बहन! मैंने सामान बाहर रख दिया है, आप उठा लीजिए और मरयम वह सामान उठाते वक़्त हमेशा कहती थी, ''जाओ मेरे भाई! अल्लाह तुम्हारा ख़ातमा ईमान पर करे'' हमें यह दुआ अजीब सी लगती थी लेकिन हम चुप रहते थे।

आपने उसे पिछले साल भी हज पर भिजवाने की कोशिश की थी लेकिन उसने यह सोच कर इनकार कर दिया था वह अगर सऊदी अरब चला गया तो मरयम बहन ख़ुद को बेसहारा महसूस करेगी, वह इस बार भी नहीं जाना चाहता था लेकिन आपने उसे पूरे साल की तन्ख़्वाह दे दी। अब्दुल ग़फ़ूर ने वह सारी रक़म मरयम बहन को दे दी थी। वह हज पर चला गया, उसका वक़्त पूरा हो चुका था इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़बरदस्ती मक्का बुलवाया, मरयम बहन की दुआ क़ुबूल हुई और मेरा शौहर ईमान की अज़ीम हालत में अल्लाह तआ़ला के पास चला गया। आप हैरान होंगे कि मरयम बहन ने जब यह ख़बर सुनी तो उसके मुँह से बेइख़्तियार शुक्र अलहम्दुलिल्लाह निकल गया''।

वह रुके, कुछ लम्बी-लम्बी साँसें लीं और फिर बोले, ''मैं यह कहानी सुन कर सकते में आ गया था। मैं इसके बाद मरयम बहन के घर गया और मैंने अब्दुल ग़फ़ूर की तरह उस ख़ानदान की ज़िम्मेदारी उठा ली। मैं उस दिन से मरयम बहन, अब्दुल ग़फ़ूर की बीवी और अपने सारे दोस्तों से कहता आ रहा हूँ कि मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह मुझे अब्दुल ग़फ़ूर की मौत नसीब कर दे। मैं ख़ुद भी दिन में सैकड़ों बार ईमान पर ख़ातमे की दुआ करता हूँ, मैंने ज़िन्दगी में कभी हज नहीं किया। मैं पन्द्रह साल तक अब्दुल ग़फ़ूर की तरह बुलावे का इन्तेज़ार करता रहा। अल्लाह तआला ने अब जाकर मेरी भी सुन ली है। इसलिए मुझे भी अब्दुल ग़फ़ूर की तरह ज़बरदस्ती बुलाया जा रहा है। मैं जा रहा हूँ और मुझे यक़ीन है कि अल्लाह मुझे अब्दुल ग़फ़ूर जैसी मौत ही देगा''। वह रुके, ख़ुशी के आँसू पोंछे, मुझे सीने से लगाया और अपने बेडरूम में चले गये। मैं देर तक उनके ड्राइंग रूम में हैरान व परेशान बैठा रहा। वह कुछ दिन बाद हज पर चले गये, हज किया, मदीना गये, इशा की नमाज़ के लिए मस्जिदे नबवी गये, सजदे में गये और अल्लाह तआला ने उन्हें बुला लिया और वह जन्नतुल बक़ी में सहाबा के पास ही दफ़्न हुए। अल्लाह तआला ने उन्हें अब्दुल ग़फ़ूर की मौत नसीब कर दी थी। ●

Subscription Form

हां, मैं, नीचे लिखी स्कीम के तहत ***मरयम*** की सब्सक्राइबर बनना चाहती/चाहता हूं। S.No.:...............

निशान	साल	इश्यूज़	सालाना कवर कीमत	आप दें
☐	1 Year	12	360	360
☐	2 Year	24	720	700
☐	3 Year	36	1080	1000

*Name: Mr./Mrs./Miss ______________________ Date of birth (Day / Month / Year) ____

______________________ *Father/Husband'sName: ______________________

Education: ______________________ Profession: ______________________

*Address: H/No: ______________________

______________________ Post : ____

City/Vill.: ________ Distt.: ________ State: ________ Country.: ________

Land Mark.: ______________________ Pin: ________ P.O.Box No.: ____

*Mobile No: ________ Phone (Res) ________

e-mail: ______________________

मौजूदा सब्सक्राइबर्स अपनी कस्टमर ID लिखें: ____ Date .... Signature...........................

For Office Use:

subscription from...............................to.........................Subscription ID ____ Receipt no. ....

Address: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

सब्सक्राइबर्स सुविधाएं अगले अंक से उपलब्ध होंगी. समस्त विवाद केवल लखनऊ के सक्षम न्यायालयों और फोरमों के विशिष्ट अधिकार क्षेत्र के अधीन है.

यह आर्डर फार्म भेजी जाने वाली रकम के साथ भेजें। *नियम व शर्तें लागू।

मैग्ज़ीन नार्मल डाक से भेजी जाती है। रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए Rs. 240 और देना होंगें।

Monthly Magazine

मरयम

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 email: maryammonthly@gmail.com

इजाज़ा

मरयम मैग्ज़ीन को ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए इसको लागत से आधी क़ीमत पर रीडर्स को दिया जाता है जिसकी वजह से इदारे को आप सभी लोगों की फ़ाइनेंशल मदद की सख़्त ज़रूरत है।

हमारी कोशिश है कि इस मैग्ज़ीन के ज़रिए दीनी मालूमात को बेहतरीन क्वालिटी में आप सभी लोगों तक पहुंचाया जाता रहे।

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

LUCKNOW-INDIA

इजाज़ा आयतुल्लाह सीस्तानी

TAHA FOUNDATION

AN ISLAMIC SOCIAL WELFARE ORGANISATION

P.O.Box No.:37 Chowk Lucknow UP-India

इजाज़ा आयतुल्लाह ख़ामेनई

RNI NO. UPHIN/2012/43577

ENGLISH MEDIUM

taha
SCHOOL

Our Focus

- CBSE Curriculum
- Low Student-Teacher ratio
- Interactive teaching techniques
- Loving and caring atmosphere
- Qualified & Dedicated Teachers
- Deeni Taleem

ADMISSION OPEN

Pre-School To Class V

Pre-School Also Available

MUSAHIB GANJ, LUCKNOW

8840206083, 6392442920